मंगलवार
34 साल से देहरादून का विश्वास
18 अगस्त 2026
● देहरादून
● वर्ष 34
● अंक 206
● पृष्ठ 8
● मूल्य ₹ 1.00

दूनवैलीमेल

सांध्य दैनिक
आर.एन.आई. : 59626/94
email: doonvalley_news@yahoo.com
Website: dunvalleymail.com
डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

मकान पर गिरा पहाड़ से मलबा

परिवार के 4 लोग जमींदोज

हमारे संवाददाता

पौड़ी। सतपुली तहसील में भारी बारिश के कारण एक बड़ा हादसा हो गया। द्वारीखाल ब्लॉक के अंतर्गत आने वाले ग्राम मेहरगांव (भलगांव) में एक मकान पर भारी मात्रा में मलबा गिरने से पूरा मकान धराशाई हो गया। मलबे में चार लोगों के दबे होने की सूचना मिलते ही प्रशासन और आपदा प्रबंधन टीम सक्रिय हो गई है।

स्थानीय निवासियों के अनुसार, रात भर की लगातार बारिश के बाद सुबह के समय पहाड़ी ढलान से बड़ी मात्रा में मिट्टी, पत्थर और मलबा फिसलकर मकान पर आ गिरा। जिस कारण मकान पूरी तरह ढह गया और उसके नीचे रहने वाले लोग मलबे में दब गए। शुरुआती जानकारी के मुताबिक, इस मकान में एक मैक्स चालक अपने परिवार के साथ रहता था। घटना की खबर फैलते ही आसपास के ग्रामीण मौके पर पहुंचे और मलबा हटाने का काम शुरू कर दिया।

सतपुली और लैंसडौन से एसडीआरएफ की टीम तथा प्रशासनिक अधिकारी तुरंत मौके के लिए रवाना हो गए हैं। रेस्क्यू ऑपरेशन चल रहा है और मलबे में दबे लोगों को सुरक्षित निकालने की कोशिशें जारी हैं। मौसम विभाग के अनुसार क्षेत्र में पिछले कुछ दिनों से भारी से बहुत भारी बारिश हो रही है, जिससे कई जगहों पर भूस्खलन और मकानों के क्षतिग्रस्त होने की घटनाएं सामने आ रही हैं।

जिला प्रशासन ने सतपुली तहसील के संवेदनशील क्षेत्रों में अलर्ट जारी कर रखा है। एसडीआरएफ, स्थानीय पुलिस और राजस्व विभाग की टीमें प्रभावित इलाकों में तैनात हैं। अधिकारियों ने बताया कि बारिश जारी रहने की संभावना को देखते हुए लोगों से अनुरोध किया गया है कि वे असुरक्षित स्थानों से सुरक्षित जगहों पर चले जाएं। पहाड़ी ढलानों के पास बने मकानों में रहने वाले परिवारों को विशेष सावधानी बरतने की सलाह दी गई है। एसडीआरएफ टीम के पहुंचने के बाद मलबा हटाने का काम मशीनरी और मानव बल दोनों से किया जा रहा है। घायलों को तुरंत अस्पताल पहुंचाया जाएगा। प्रशासन प्रभावित परिवार को राहत सामग्री और मुआवजे की प्रक्रिया भी शुरू करने वाला है।

करंट लगने से पिता-पुत्री की मौत

हमारे संवाददाता

नैनीताल। वनभूलपुरा क्षेत्र में दर्दनाक हादसे ने एक परिवार की खुशियां पलभर में मातम में बदल दीं। एसी ठीक करते समय करंट की चपेट में आए 44 वर्षीय पिता को बचाने पहुंची उनकी 12 वर्षीय बेटी भी करंट की चपेट में आ गई। हादसे में पिता-पुत्री दोनों की मौत हो गई।

जानकारी के अनुसार 44 वर्षीय नदीम कार के गैराज में काम करते थे। सोमवार रात वह घर की छत पर एसी में आई तकनीकी खराबी को ठीक करने पहुंचे थे। इसी दौरान वह अचानक करंट की चपेट में आ गए। नदीम की चीख सुनकर परिवार में अफरा-तफरी मच गई। पिता को करंट से जूझता देख उनकी 12 वर्षीय बेटी अलिस्बा उन्हें बचाने के लिए दौड़ी। बताया जा रहा है कि पिता को हाथ लगाते ही अलिस्बा भी बिजली की चपेट में आ गई। परिजनों और आसपास के लोगों ने तत्काल बिजली की आपूर्ति बंद कराई और दोनों को गंभीर हालत में डॉ. सुशीला तिवारी अस्पताल पहुंचाया। यहां चिकित्सकों ने जांच के बाद पिता-पुत्री दोनों को मृत घोषित कर दिया।

हादसे की सूचना के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए मोर्चरी में रखवा दिया। वनभूलपुरा कोतवाल दिनेश फर्त्याल के अनुसार, पोस्टमार्टम कराया जाएगा। प्रारंभिक जानकारी में पास स्थित खुले बिजली के पोल से करंट फैलने की आशंका जताई जा रही है। हालांकि हादसे की वास्तविक वजह क्या थी, इसकी जांच की जा रही है। बताया जा रहा है कि अलिस्बा तीन बहनों में सबसे बड़ी थी और गुरु तेग बहादुर स्कूल में कक्षा छह की छात्रा थी। जिस उम्र में उसके हाथों में किताबें और स्कूल बैग होने चाहिए थे, उसी उम्र में पिता को बचाने की कोशिश करते हुए उसकी भी जान चली गई।

दून वैली मेल

संपादकीय

दिमागी नक्सल की राजनीति

राजनीति में विरोधी को नाम देना पुरानी परंपरा है। कभी कोई देशद्रोही कहलाता है, कभी अराजकतावादी, कभी टुकड़े-टुकड़े गैंग और कभी किसी नए विशेषण से संबोधित किया जाता है। लेकिन लोकतंत्र की विडंबना तब सामने आती है, जब सत्ता की ओर से दिया गया कोई तंज विरोधियों के लिए ही पहचान और प्रतिरोध का प्रतीक बन जाए। दिमागी नक्सल भी अब इसी बहस का हिस्सा बनता दिखाई दे रहा है। प्रधानमंत्री के तंज के बाद इस शब्द को राजनीतिक पहचान के रूप में इस्तेमाल किए जाने और बड़ी संख्या में लोगों के इससे जुड़ने के दावे ने एक महत्वपूर्ण सवाल खड़ा किया है क्या राजनीतिक विरोधियों को दिए गए विशेषण अब उनके खिलाफ नहीं, बल्कि उनके पक्ष में काम करने लगे हैं? यह केवल किसी नए राजनीतिक समूह के गठन का मामला नहीं है। इसके पीछे भारतीय राजनीति की बदलती भाषा और सोशल मीडिया के दौर में बन रहे नए राजनीतिक व्यवहार को समझने की जरूरत है। सत्ता जब किसी विरोधी विचार को खारिज करने के लिए एक कठोर विशेषण इस्तेमाल करती है तो वह शायद तत्काल राजनीतिक हमला समझती है। लेकिन सोशल मीडिया की दुनिया में शब्दों की यात्रा सत्ता के नियंत्रण में नहीं रहती। वही शब्द मीम बनता है, अभियान बनता है और कभी-कभी राजनीतिक पहचान का हिस्सा भी बन जाता है। यही इस पूरे घटनाक्रम की सबसे दिलचस्प बात है। लोकतंत्र का मूल स्वभाव ही असहमति है। सरकार की नीतियों पर सवाल करना, बेरोजगारी पर आवाज उठाना, महंगाई पर बहस करना, शिक्षा और स्वास्थ्य की बदहाली पर सवाल पूछना या किसी कानून का विरोध करना नागरिक जीवन का हिस्सा है। इन सवालों के जवाब तर्क और तथ्यों से दिए जाने चाहिए। यदि हर आलोचक को किसी खतरनाक राजनीतिक खांचे में डाल दिया जाएगा तो लोकतांत्रिक संवाद की जगह आरोपों की राजनीति ले लेगी। फिर मुद्दा यह नहीं रहेगा कि सवाल सही है या गलत। मुद्दा यह बन जाएगा कि सवाल पूछने वाला किस खेमे में है। यही स्थिति लोकतंत्र के लिए सबसे अधिक चिंताजनक है। दिमागी नक्सल नाम से सामने आए राजनीतिक प्रयोग को केवल मजाक या सोशल मीडिया की सनसनी मानकर खारिज करना भी जल्दबाजी होगी। क्योंकि जनता किसी राजनीतिक पहचान से क्यों जुड़ती है, यह सवाल ज्यादा महत्वपूर्ण है। अगर बड़ी संख्या में लोग सचमुच इससे जुड़ रहे हैं तो मुख्यधारा की पार्टियों को यह समझना होगा कि जनता के भीतर किसी तरह की राजनीतिक बेचैनी मौजूद है। लेकिन यहां एक दूसरी कसौटी भी है। किसी तंज को अपना नाम बना लेना आसान है, राजनीति करना कठिन। सोशल मीडिया पर समर्थन और चुनावी मैदान में समर्थन एक चीज नहीं है। चुनाव संगठन, उम्मीदवार, बूथ और स्थानीय मुद्दों के दम पर जीता जाता है। इसलिए इस नए प्रयोग की असली परीक्षा तभी होगी जब यह नाम से आगे बढ़कर नीति और कार्यक्रम की बात करेगा। आज भारतीय राजनीति को सबसे ज्यादा जरूरत भाषा में संयम और बहस में गंभीरता की है। राजनीतिक विरोधी दुश्मन नहीं होते। सत्ता बदलना लोकतंत्र की सामान्य प्रक्रिया है। आज जो सत्ता में है, कल विपक्ष में हो सकता है। इसलिए ऐसे विशेषणों की राजनीति अंततः किसी एक दल को नहीं, पूरी राजनीतिक संस्कृति को नुकसान पहुंचाती है। लोकतंत्र में किसी व्यक्ति को यह साबित करने की जरूरत नहीं होनी चाहिए कि वह सवाल पूछने के कारण राष्ट्रविरोधी नहीं है। सवाल पूछना नागरिक अधिकार है और सत्ता से जवाब मांगना लोकतंत्र की आत्मा। दिमागी नक्सल जैसा शब्द अगर अब राजनीतिक पहचान बन रहा है तो इसे केवल विरोधियों की चाल कहकर खारिज करने के बजाय सत्ता और विपक्ष दोनों को इससे पैदा हुए संदेश को पढ़ना चाहिए। क्योंकि लोकतंत्र में सबसे खतरनाक चीज असहमति नहीं, असहमति से डर है। तंज से राजनीति चमक सकती है, लेकिन लोकतंत्र मजबूत नहीं होता। लोकतंत्र तब मजबूत होता है जब सत्ता अपने आलोचक की आवाज सुनती है और आलोचक सत्ता के सामने तथ्य के साथ खड़ा होता है। इसलिए जरूरत किसी नए विशेषण की नहीं, एक ऐसी राजनीतिक भाषा की है जिसमें सवाल का जवाब सवाल से नहीं, तर्क से दिया जाए। यही लोकतंत्र की असली परीक्षा है।

चोरी की बाईक के साथ गिरफ्तार

संवाददाता

टिहरी। पुलिस ने चोरी की बाईक के साथ एक को गिरफ्तार कर उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसको न्यायालय में पेश किया जहां से उसको न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया। मिली जानकारी के अनुसार श्रीमती श्वेता चौबे, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जनपद टिहरी गढ़वाल, द्वारा जनपद के सभी थाना प्रभारियों को अपराधों की रोकथाम एवं चोरी की घटनाओं पर अंकुश लगाने हेतु निर्देशित किया गया था। इसी क्रम में कोतवाली कैम्पटी पुलिस ने नैनबाग बाजार से चोरी हुई मोटरसाइकिल को मात्र 24 घंटे के भीतर बरामद कर 19 वर्षीय युवक को गिरफ्तार किया है। 16 अगस्त 2026 की रात्रि नैनबाग बाजार में दुकान के बाहर खड़ी मोटरसाइकिल चोरी हो गई थी। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी। चौकी प्रभारी नैनबाग उनि मंगेश कुमार के नेतृत्व में पुलिस टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए चोरी की मोटरसाइकिल बरामद कर समीर उर्फ संजय थापा पुत्र लाल बहादुर, निवासी ग्राम नागल हटनाला, थाना राजपुर, देहरादून, को गिरफ्तार किया। पुलिस ने उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसको न्यायालय में पेश किया जहां से उसको न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया।

उत्तराखंड भाजपा में बदलाव की 'आहट'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। भाजपा की नई केंद्रीय कार्यकारिणी की तस्वीर सामने आने के बाद उत्तराखंड भाजपा के सियासी गलियारों में भी हलचल तेज हो गई है। उत्तराखंड के मौजूदा प्रदेश प्रभारी दुष्यंत गौतम का नाम नई केंद्रीय कार्यकारिणी में शामिल नहीं होने के बाद अब उनके प्रदेश प्रभारी पद को लेकर भी अटकलें शुरू हो गई हैं। हालांकि पार्टी की ओर से इस संबंध में अभी कोई आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है, लेकिन संगठन के भीतर संभावित बदलाव को लेकर चर्चाओं का बाजार गर्म है। दुष्यंत गौतम पिछले कुछ समय से उत्तराखंड भाजपा की चुनावी और संगठनात्मक रणनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। ऐसे में केंद्रीय स्तर पर नई टीम में उनका नाम नहीं होना राजनीतिक नजरिए से अहम माना जा रहा है। अब सवाल यह है कि क्या केंद्रीय संगठन में उनकी भूमिका बदलने के साथ उत्तराखंड में भी प्रभारी के स्तर पर बदलाव किया जाएगा?

उत्तराखंड में विधानसभा चुनाव 2027 की तैयारियां धीरे-धीरे तेज हो रही हैं। भाजपा के लिए लगातार सत्ता में बने रहने की चुनौती है। ऐसे समय में प्रदेश प्रभारी का पद बेहद महत्वपूर्ण हो जाता है। प्रभारी की भूमिका केवल संगठनात्मक बैठकों तक सीमित नहीं रहती, बल्कि टिकट चयन, चुनावी रणनीति, केंद्रीय नेतृत्व और प्रदेश संगठन के बीच समन्वय तथा अंदरूनी राजनीतिक समीकरणों को साधने में भी अहम होती है। यही वजह है कि दुष्यंत गौतम के भविष्य को लेकर चल रही चर्चाओं को 2027 की चुनावी तैयारियों से जोड़कर देखा जा रहा है।

भाजपा में केंद्रीय संगठन में बदलाव के बाद कई नेताओं की जिम्मेदारियों में फेरबदल होना सामान्य संगठनात्मक प्रक्रिया है। किसी नेता का केंद्रीय कार्यकारिणी में शामिल न होना अपने आप

◆केंद्रीय टीम से दुष्यंत गौतम का नाम कटते ही उत्तराखंड भाजपा में सुगबुगाहट तेज

◆लंबे समय से राज्य के समीकरण साध रहे गौतम की विदाई के सियासी मायने अहम

◆आधिकारिक घोषणा का इंतजार, लेकिन संगठन के भीतर प्रभारी को लेकर चर्चाएं गर्म

में यह प्रमाण नहीं है कि उसे किसी प्रदेश के प्रभारी पद से भी हटाया जा रहा है। लेकिन राजनीति में समय और परिस्थितियां संकेत जरूर देती हैं। यदि भाजपा केंद्रीय संगठन को नई ऊर्जा और नई जिम्मेदारियों के साथ आगे बढ़ाने की रणनीति पर काम कर रही है, तो राज्यों के प्रभारियों में भी बदलाव की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। उत्तराखंड के मामले में यह फैसला इसलिए भी महत्वपूर्ण होगा क्योंकि प्रदेश भाजपा में 2027 को लेकर संगठनात्मक तैयारियां पहले ही शुरू हो चुकी हैं।

उत्तराखंड भाजपा में संभावित प्रभारी बदलाव की चर्चा के साथ यह सवाल भी उठ रहा है कि यदि नया प्रभारी नियुक्त होता है तो उसका राजनीतिक और क्षेत्रीय प्रोफाइल क्या होगा? गढ़वाल और कुमाऊं के बीच संतुलन उत्तराखंड की राजनीति में हमेशा महत्वपूर्ण रहा है। भाजपा भी संगठनात्मक नियुक्तियों में इस संतुलन को ध्यान में रखती रही है। ऐसे में नए प्रभारी के चयन में राजनीतिक अनुभव के साथ-साथ उत्तराखंड के दोनों मंडलों की राजनीतिक संवेदनशीलता को समझने की क्षमता भी अहम हो सकती है। उत्तराखंड भाजपा के लिए आने वाला समय बेहद महत्वपूर्ण है। सरकार के सामने उपलब्धियों को जनता तक पहुंचाने की चुनौती है तो संगठन के सामने सत्ता विरोधी भावनाओं को रोकने की। विपक्ष लगातार बेरोजगारी, पलायन, शिक्षा, स्वास्थ्य और आपदा जैसे मुद्दों पर सरकार को घेर रहा है। ऐसे में यदि प्रभारी बदला जाता है तो इसे केवल संगठनात्मक बदलाव नहीं, बल्कि 2027 के लिए भाजपा की नई चुनावी टीम तैयार करने की कवायद के तौर पर भी देखा जा सकता है। फिलहाल दुष्यंत गौतम को उत्तराखंड प्रभारी पद से हटाए जाने को लेकर कोई आधिकारिक निर्णय सामने नहीं आया है। इसलिए मौजूदा चर्चाओं को अभी अटकलों के तौर पर ही देखा जाना चाहिए। लेकिन इतना जरूर है कि केंद्रीय कार्यकारिणी की नई तस्वीर ने उत्तराखंड भाजपा के संगठनात्मक भविष्य को लेकर कई सवाल खड़े कर दिए हैं।

'शुद्धिकरण' पर बढ़ा घमासान

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की राजनीति में एक मंच ने ऐसा क्या कर दिया कि उसके शुद्धिकरण की जरूरत पड़ गई? सवाल मंच का नहीं है। सवाल उस सोच का है, जो किसी व्यक्ति के वहां खड़े होने के बाद मंच को 'शुद्ध' करने की जरूरत महसूस करती है। हल्द्वानी की घटना अब देहरादून पहुंच चुकी है। उत्तराखंड प्रदेश कांग्रेस अनुसूचित जाति विभाग के आह्वान पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने सचिवालय और पुलिस मुख्यालय का घेराव किया। नारे लगे। विरोध हुआ। सरकार से जवाब मांगा गया। लेकिन इस पूरे घटनाक्रम में सबसे बड़ा सवाल शायद यह है कि हम 2026 में खड़े हैं या उस मानसिकता में, जहां इंसान की मौजूदगी से जगह अशुद्ध और किसी दूसरे की मौजूदगी से पवित्र हो जाती है?

कांग्रेस ने इस घटना को सामाजिक भेदभाव और दलित सम्मान से जोड़ते हुए प्रदेशभर में विरोध का फैसला किया है। जाहिर है, चुनावी राजनीति में हर मुद्दे का अपना गणित होता है। लेकिन कुछ सवाल ऐसे होते हैं जिन्हें केवल चुनावी गणित से नहीं देखा जा सकता। किसी सार्वजनिक मंच का शुद्धिकरण अगर किसी व्यक्ति की जातिगत पहचान से जुड़ा है, तो यह सिर्फ एक राजनीतिक घटना नहीं रह जाती। यह समाज के सामने आईना रख देती है।

राजनीति में मंच इसलिए बनाया जाता है कि वहां से जनता की बात की जाए। भाषण दिए जाएं। सवाल उठाए जाएं। सरकार की योजनाएं बताई जाएं। विपक्ष अपनी बात रखे। लेकिन अगर उसी मंच पर खड़े होने वाले व्यक्ति की जाति मंच को अशुद्ध बना देती है, तो फिर सवाल मंच पर नहीं, उस सोच पर होना चाहिए और अगर कांग्रेस इस सवाल को उठाती है तो भाजपा को भी इसका जवाब देना चाहिए। जवाब राजनीतिक आरोपों से नहीं, साफ शब्दों में। क्या ऐसी किसी घटना का समर्थन किया जाता है? क्या ऐसी सोच

◆कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने सचिवालय और पुलिस मुख्यालय का घेराव कर सरकार को घेरा

◆21वीं सदी में इंसान की मौजूदगी से मंच को पवित्र व अशुद्ध मानने वाली सोच पर सवाल

◆अनुसूचित जाति विभाग के आह्वान के बाद विरोध-प्रदर्शन तेज, राजनीति का पारा चढ़ाया

स्वीकार्य है? क्या संविधान के सामने जाति के आधार पर पवित्र और अपवित्र की कोई श्रेणी बची है? इन सवालों के जवाब जरूरी हैं।

कांग्रेस कार्यकर्ताओं का सचिवालय और पुलिस मुख्यालय तक पहुंचना बताता है कि पार्टी इस मुद्दे को सिर्फ सोशल मीडिया की बहस बनाकर छोड़ना नहीं चाहती। कांग्रेस इसे सामाजिक सम्मान और संविधान के सवाल के रूप में पेश कर रही है। लेकिन यहां कांग्रेस के सामने भी सवाल है। क्या यह लड़ाई केवल प्रदर्शन और नारों तक सीमित रहेगी? क्या पार्टी गांवों में जाकर बताएगी कि सामाजिक बराबरी का मतलब क्या है? क्या पार्टी अपने भीतर भी जातिगत भेदभाव के सवालों पर उतनी ही गंभीर होगी? क्योंकि सामाजिक न्याय सिर्फ सत्ता के खिलाफ भाषण देने से नहीं आता। उसके लिए समाज के भीतर भी लड़ाई लड़नी पड़ती है।

उत्तराखंड खुद को देवभूमि कहता है। यहां मंदिर हैं, तीर्थ हैं, परंपराएं हैं। लेकिन इसी समाज में अगर किसी इंसान की मौजूदगी के बाद किसी मंच को शुद्ध करने की जरूरत पड़ती है तो यह सवाल देवभूमि से ज्यादा समाज की मानसिकता पर खड़ा होता है। धर्म और आस्था निजी विषय हो सकते हैं। लेकिन जब सार्वजनिक जीवन में जाति के आधार पर सम्मान और अपमान तय होने लगे तो लोकतंत्र बीच में आ जाता है और लोकतंत्र का संविधान कहता है कि नागरिक बराबर हैं। न मंच किसी जाति का है, न सड़क किसी जाति की है, न सचिवालय किसी जाति का है और न पुलिस मुख्यालय। फिर शुद्धिकरण किसका? मंच का या मानसिकता का?

मंच शुद्धिकरण का यह विवाद राजनीतिक रंग ले चुका है। कांग्रेस इसे दलित सम्मान और संविधान की लड़ाई बताएगी। भाजपा इसे कांग्रेस की राजनीतिक रणनीति बता सकती है। लेकिन जनता के सामने सवाल इससे बड़ा है। क्या राजनीति जाति के नाम पर मंच धोती रहेगी या समाज से जाति का मैल धोने की कोशिश भी करेगी? सच तो यह है कि पानी से मंच साफ हो सकता है, लेकिन सदियों की सोच पानी से नहीं धुलती। उसके लिए संविधान पढ़ना पड़ता है। बराबरी को स्वीकार करना पड़ता है और सबसे जरूरी इंसान को इंसान समझना पड़ता है।

जाजरचिंगरी में माचिस की डिब्बियों से तैयार किया फिंगर अटेंडेंस सिस्टम

पिथौरागढ़(आरएनएस)। महंगे डिजिटल उपकरणों के बिना भी तकनीक को समझा और सिखाया जा सकता है,राजकीय आदर्श विद्यालय जाजर चिंगरी ने इस सोच को अपने एक अनूठे प्रयोग से साबित किया है। नवाचारों के लिए पहचान बना चुके इस विद्यालय में माचिस की डिब्बियों और एक साधारण बोर्ड की मदद से मैनुअल फिंगर अटेंडेंस सिस्टम तैयार किया गया है। अब विद्यार्थी और शिक्षक इसी व्यवस्था के जरिए अपनी उपस्थिति दर्ज कर रहे हैं। विद्यालय के प्रधानाचार्य व शैलेश मटियानी पुरस्कार से सम्मानित चंद्रशेखर जोशी ने बताया कि इस पहल का उद्देश्य बच्चों को केवल किताबों तक सीमित रखने के बजाय उन्हें करके सीखने और प्रयोग के जरिए तकनीक को समझने का अवसर देना हैइसी सोच के तहत विद्यालय में उपलब्ध सामान्य और आसानी से मिलने वाली सामग्री का उपयोग कर यह मॉडल तैयार किया गया। विद्यालय पहुंचने पर विद्यार्थी मैनुअल फिंगर अटेंडेंस सिस्टम में अपनी उपस्थिति दर्ज करते हैं। विद्यालय से छुट्टी के समय भी इसी प्रक्रिया को पूरा कर सिस्टम को बंद किया जाता है। इसके जरिए बच्चों को उपस्थिति दर्ज करने की आधुनिक प्रणालियों और बायोमेट्रिक तकनीक के बारे में समझने का अवसर मिल रहा है। बताया कि विद्यार्थी इस प्रयोग को लेकर खासे उत्साहित हैं। इस पहल से बच्चों में तकनीक के प्रति जिज्ञासा बढ़ रही है और वे स्वयं नई चीजें बनाने तथा उन्हें आजमाने के लिए प्रेरित हो रहे हैं। वहीं अभिभावकों ने भी इस नवाचार की सराहना की है।

पार्टी में उपेक्षा से आहत महिला पार्षद ने भाजपा के पद से दिया इस्तीफा

अल्मोड़ा(आरएनएस)। नगर निगम के वार्ड संख्या-2 सैलाखोला की पार्षद वंदना वर्मा ने भाजपा संगठन में मिले जिला निकाय प्रकोष्ठ के सहसंयोजक पद से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने अपना इस्तीफा भाजपा जिलाध्यक्ष को भेजते हुए पार्टी में लगातार उपेक्षा और अपमान का आरोप लगाया है। हालांकि उन्होंने पार्षद पद से इस्तीफा नहीं दिया है। जिलाध्यक्ष को भेजे पत्र में वंदना वर्मा ने कहा कि वह वार्डवासियों के सहयोग से निर्विरोध पार्षद निर्वाचित हुई थीं और पार्टी ने उन्हें जिला निकाय प्रकोष्ठ में सहसंयोजक का दायित्व सौंपा था। उन्होंने कहा कि उन्होंने पूरी निष्ठा के साथ जिम्मेदारी निभाने का प्रयास किया, लेकिन संगठन के कुछ लोगों के व्यवहार से उन्हें लगातार उपेक्षा और अपमान का सामना करना पड़ा। उन्होंने आरोप लगाया कि इस संबंध में संबंधित लोगों को अवगत कराने के बावजूद स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। इससे आहत होकर उन्होंने अपने स्वाभिमान को सर्वोपरि रखते हुए पार्टी के संगठनात्मक पद से इस्तीफा देने का निर्णय लिया। स्वतंत्रता दिवस पर सामने आए इस घटनाक्रम के बाद स्थानीय राजनीतिक हलकों में चर्चाओं का दौर शुरू हो गया है। अब निगाहें भाजपा संगठन की प्रतिक्रिया और पार्षद द्वारा लगाए गए आरोपों पर उठाए जाने वाले संभावित कदमों पर टिकी हैं।

15 पाउंड का केक काटकर डीडीहाट जिला बनाने की मांग उठाई

पिथौरागढ़(आरएनएस)। डीडीहाट को जिला बनाने की घोषणा के 15 साल बाद भी मांग पूरी नहीं होने पर जनप्रतिनिधियों व स्थानीय लोगों ने आक्रोश जताया। जिला बनाओ संघर्ष समिति के सदस्यों ने 15 पाउंड का केक काटकर सरकार के खिलाफ विरोध दर्ज कराया। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि जब घोषणा को डेढ़ दशक बीत चुका है तो अब डबल इंजन की सरकार को डीडीहाट को जिला बनाने की ठोस कार्रवाई करनी चाहिए। तत्कालीन मुख्यमंत्री रमेश चंद्र पोखरियाल ने 15 अगस्त 2011 को डीडीहाट को जिला बनाने की घोषणा की थी। लेकिन 15 वर्ष बीतने के बावजूद घोषणा धरातल पर नहीं उतर सकीजिला बनाओ संघर्ष समिति ने 15 अगस्त 2012 से हर वर्ष 15 अगस्त को केक काटकर अपना विरोध दर्ज कराने की परंपरा शुरू की,घोषणा के 15 वर्ष पूरे होने पर 15 पाउंड का केक काटा गया। वक्ताओं ने कहा कि जिला बनने से क्षेत्र में प्रशासनिक सुविधाओं का विस्तार होगा और दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को सरकारी कार्यों के लिए लंबी दूरी तय नहीं करनी पड़ेगी। कांग्रेस, डीडीहाट यूथ क्लब, व्यापार मंडल और पूर्व सैनिक संगठन ने प्रदेश सरकार पर सवाल खडे किए और डीडीहाट को जिला बनाने की मांग उठाई। इस दौरान नगर पालिका अध्यक्ष गिरीश चुफाल, लवी कफलिया, गोविंद लाल साह, रविंद्र बोरा समेत बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *सांध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

–प्रबंधक विज्ञापन

'देवभूमि में डर्टी पालिटिक्स'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। देवभूमि उत्तराखंड इन दिनों सिर्फ बारिश, आपदा, सड़क और पहाड़ की बदहाल जिंदगी के सवालों से नहीं जूझ रहा, बल्कि सियासत का तापमान भी लगातार बढ़ रहा है। प्रदेश की राजनीति अब देहरादून की सीमाओं से निकलकर दिल्ली तक पहुंचती दिखाई दे रही है। सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच आरोप-प्रत्यारोप की ऐसी जंग छिड़ी है, जिसमें विकास और जनसरोकार के मुद्दे पीछे छूटते नजर आ रहे हैं।

उत्तराखंड में विधानसभा चुनाव 2027 की आहट के साथ राजनीतिक दलों ने अपनी रणनीति तेज कर दी है। भाजपा जहां संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत करने और सरकार की उपलब्धियों को जनता तक पहुंचाने में जुटी है, वहीं कांग्रेस सरकार को घेरने के लिए बेरोजगारी, शिक्षा, पलायन, महंगाई, आपदा और सरकारी व्यवस्थाओं को मुद्दा बना रही है। दोनों दलों की सक्रियता से साफ है कि आने वाले महीनों में प्रदेश की राजनीति और ज्यादा आक्रामक होने वाली है।

राजनीति में आरोप लगना नई बात नहीं है, लेकिन उत्तराखंड में जिस तरह व्यक्तिगत हमले, बयानबाजी और एक-दूसरे की राजनीतिक नीयत पर सवाल उठाए जा रहे हैं, उसने बहस का स्तर जरूर बदल दिया है। सत्ता पक्ष विपक्ष पर भ्रम फैलाने और राजनीतिक अवसरवाद का आरोप लगा रहा है। विपक्ष सरकार पर जनमुद्दों से ध्यान भटकाने और सत्ता का इस्तेमाल राजनीतिक लाभ के लिए करने का आरोप लगा रहा है।

इस सियासी शोर में असली सवाल यह है कि पहाड़ के गांवों में क्या बदल रहा है? क्या युवाओं को रोजगार मिल रहा है? क्या सरकारी स्कूल सुरक्षित हैं? क्या पहाड़ी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाएं सुधरी हैं? क्या पलायन रुका है? क्या बरसात में हर साल टूटने वाली सड़क और पुलों की समस्या का स्थायी समाधान हुआ है? इन सवालों के जवाब राजनीतिक नारों से नहीं, जमीन पर दिखाई देने वाले काम से मिलेंगे।

उत्तराखंड छोटा राज्य जरूर है, लेकिन राष्ट्रीय राजनीति में इसकी राजनीतिक अहमियत लगातार बढ़ी है। प्रदेश में सत्ता परिवर्तन का असर सिर्फ देहरादून तक सीमित नहीं रहता, बल्कि दिल्ली की

> ◆प्रदेश में आपदा, बदहाल सड़कें और पलायन जैसे गंभीर मुद्दे
> ◆वहीं दिल्ली से लेकर दून तक राजनीतिक बयानबाजी चरम पर
> ◆कांग्रेस ने कई मुद्दों को ढाल बनाकर सरकार की घेराबंदी तेज
> ◆प्रदेश में राज्य के जमीनी मुद्दे फिलहाल हाशिए पर नजर आ रहे

राजनीति में भी उसकी गूंज सुनाई देती है। कांग्रेस और भाजपा दोनों ही उत्तराखंड को 2027 की बड़ी राजनीतिक लड़ाई की प्रयोगशाला के रूप में देख रहे हैं। भाजपा के लिए सत्ता बरकरार रखना चुनौती है तो कांग्रेस के सामने लंबे समय से सत्ता से बाहर रहने के बाद वापसी की चुनौती है। यही वजह है कि प्रदेश के छोटे-बड़े राजनीतिक घटनाक्रम दिल्ली के राजनीतिक गलियारों तक पहुंच रहे हैं। केंद्रीय नेतृत्व की नजर उत्तराखंड के संगठन, सरकार और विपक्ष की गतिविधियों पर बनी हुई है।

इस लड़ाई का एक नया मैदान सोशल मीडिया भी है। नेताओं के बयान, वीडियो, पोस्ट और आरोप कुछ ही मिनटों में प्रदेशभर में पहुंच रहे हैं। राजनीतिक दल अपने समर्थकों के जरिए नैरेटिव बनाने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन सवाल यह है कि क्या सोशल मीडिया की यह आक्रामक राजनीति वास्तव में जनता के सवालों का समाधान करेगी? लोकतंत्र में विपक्ष का काम सरकार से सवाल पूछना है और सत्ता पक्ष का दायित्व जनता को अपने काम का हिसाब देना। लेकिन जब दोनों पक्षों की राजनीति सिर्फ एक-दूसरे को नीचा दिखाने तक सीमित हो जाए, तो लोकतांत्रिक बहस कमजोर होती है।

2027 का विधानसभा चुनाव अभी दूर है, लेकिन उसकी तैयारी शुरू हो चुकी है। टिकट के दावेदार सक्रिय हैं। संगठनात्मक बैठकों का दौर चल रहा है। नेताओं के दौरे बढ़ रहे हैं। बूथ स्तर पर समीकरण बनाए जा रहे हैं। पुराने नेताओं की भूमिका और नए चेहरों की संभावनाओं पर चर्चा तेज है। भाजपा के सामने सरकार के कामकाज को लेकर जनता के बीच भरोसा बनाए रखने की चुनौती है। कांग्रेस के सामने सरकार विरोधी माहौल को वोट में बदलने की चुनौती है। क्षेत्रीय दलों और छोटे राजनीतिक समूहों के सामने अपनी प्रासंगिकता बचाए रखने की चुनौती है। ऐसे में आने वाले दिनों में बयान और पलटवार और तीखे होंगे।

उत्तराखंड की राजनीति में दिल्ली का प्रभाव हो सकता है, लेकिन अंतिम फैसला पहाड़, मैदान और गांव-कस्बों की जनता करेगी। जनता यह देखेगी कि कौन उसके मुद्दों पर खड़ा है और कौन सिर्फ चुनाव के समय उसके दरवाजे पर पहुंचता है। देवभूमि को डर्टी पालिटिक्स नहीं, साफ राजनीति चाहिए। आरोपों की राजनीति नहीं, जवाबदेही की राजनीति चाहिए। मंचों पर बड़े-बड़े दावों के बजाय स्कूल, अस्पताल, सड़क, रोजगार और सुरक्षित जीवन चाहिए। 2027 की लड़ाई में सबसे बड़ा सवाल यही होगा कौन किसे हराएगा, यह बाद की बात है, पहले यह तय होगा कि जनता के असली सवालों पर कौन खड़ा दिखाई देता है। क्योंकि उत्तराखंड की राजनीति का फैसला दिल्ली के बंद कमरों में नहीं, पहाड़ के गांवों और मैदान के बूथों पर होगा।

सड़क सुरक्षा के तहत निराश्रित गौवंश को लगाए गए रेडियम बेल्ट

चम्पावत (आरएनएस)। सर्वोच्च न्यायालय की ओर से सड़क सुरक्षा के संबंध में दिए गए निर्देशों के क्रम में जनपद में सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए निरंतर प्रभावी कदम उठाए जा रहे हैं। जिसके तहत जिला पंचायत की ओर से टनकपुर-बनबसा मार्ग पर निराश्रित गोवंश की सुरक्षा एवं सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के उद्देश्य से उनके गले में रेडियम बेल्ट लगाए गए। जिला पंचायत के अपर मुख्य अधिकारी अनिल जोशी ने बताया कि टनकपुर-बनबसा मार्ग पर सड़क किनारे विचरण करने वाले निराश्रित गोवंश को चिन्हित कर रेडियम बेल्ट लगाए गए हैं। रेडियम बेल्ट रात्रि एवं कम दृश्यता की स्थिति में वाहन चालकों को दूर से दिखाई देंगे, जिससे वाहन चालक समय रहते सतर्क हो सकेंगे और गोवंश के साथ होने वाली संभावित दुर्घटनाओं की संभावना को कम किया जा सकेगा। डीएम ने मुख्य पशुचिकित्साधिकारी को भी निराश्रित गोवंश की सुरक्षा एवं उनके समुचित प्रबंधन के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए हैं। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को सड़क सुरक्षा के दृष्टिगत निरंतर निगरानी रखने तथा आवश्यकतानुसार प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय में दाखिलों की तिथि 31 अगस्त तक बढ़ाई

हरिद्वार(आरएनएस)। उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय में विभिन्न पाठ्यक्रमों में दाखिले की तिथि बढ़ाकर 31 अगस्त कर दी गई है। विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से जारी सूचना के अनुसार छात्र-छात्राएं विस्तारित तिथि तक संबंधित पाठ्यक्रमों में प्रवेश ले सकेंगे। इससे उन विद्यार्थियों को राहत मिलेगी, जो किसी कारणवश निर्धारित समय सीमा में दाखिला नहीं ले सके थे। उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय में योग, कंप्यूटर, संस्कृत, पर्यावरण जागरूकता और व्यावहारिक अंग्रेजी विषयों में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। इन पाठ्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों को संबंधित विषयों का व्यावहारिक एवं आधारभूत ज्ञान दिया जाता हैविश्वविद्यालय में योग, ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, कर्मकांड एवं पौरोहित्य तथा कंप्यूटर अनुप्रयोग आदि विषयों में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी संचालित किए जा रहे हैं। स्नातक स्तर पर शास्त्री तथा अन्य संबंधित पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। वहीं स्नातकोत्तर स्तर पर योग, पत्रकारिता, नव्यव्याकरण, संस्कृत साहित्य, दर्शनशास्त्र, इतिहास, एजुकेशन, हिंदी एवं भाषाविज्ञान, वेद (शुक्ल यजुर्वेद) और ज्योतिष सहित विभिन्न पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैंविश्वविद्यालय के कुलसचिव दिनेश कुमार ने बताया कि विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश की अंतिम तिथि बढ़ाकर 31 अगस्त कर दी गई है। प्रवेश संबंधी सूचना विश्वविद्यालय की अधिकृत वेबसाइट पर भी जारी कर दी गई है। उन्होंने बताया कि इच्छुक छात्र-छात्राएं निर्धारित तिथि से पहले प्रवेश प्रक्रिया पूरी कर लें।

टीईटी की अनिवार्यता पर शिक्षकों में नाराजगी

रुद्रप्रयाग(आरएनएस)। अटल उत्कृष्ट राजकीय इंटर कॉलेज अगस्त्यमुनि में राजकीय शिक्षक संघ की बैठक हुई। बैठक में सहायक अध्यापकों के लिए टीईटी अनिवार्यता, पदोन्नति बहाली और स्थानांतरण समेत शिक्षक हितों से जुड़े कई मुद्दों पर चर्चा की गई। जिला अध्यक्ष आलोक रौथाण ने कहा कि कई शिक्षक सेवानिवृत्ति के करीब हैं। ऐसे में उन शिक्षकों को टीईटी के लिए दोबारा परीक्षा की तैयारी करना कठिन है। जिला महामंत्री शंकर भट्ट ने कहा कि शिक्षकों से विभागीय और गैर-शैक्षणिक कार्य भी कराए जा रहे हैं। इससे शिक्षण कार्य प्रभावित हो रहा है।

आयुक्त ने आपदा प्रभावित क्षेत्रों की व्यवस्थाओं को लेकर ली समीक्षा बैठक

हमारे संवाददाता

चमोली। आयुक्त गढ़वाल मंडल, आनन्द स्वरूप ने आज जिला सभागार गोपेश्वर में आपदा प्रभावित क्षेत्रों में राहत एवं बचाव कार्यों तथा आवश्यक सेवाओं की स्थिति को लेकर अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। उन्होंने कहा कि आपदा की स्थिति में आम जनता की सुरक्षा और सुविधा सर्वोच्च प्राथमिकता है, इसलिए सभी विभाग पूरी तत्परता और आपसी समन्वय के साथ कार्य करें।

आयुक्त ने लोक निर्माण विभाग एवं संबंधित सड़क निर्माण एजेंसियों को निर्देश दिए कि आपदा के कारण बंद सड़कों को प्राथमिकता के आधार पर तत्काल खोला जाए। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों की सड़कों को खोलने में तेजी लाई जाए, ताकि ग्रामीणों को आवागमन में परेशानी न हो और आवश्यक सेवाओं की पहुंच सुनिश्चित की जा सके। उन्होंने कहा कि आम जनता सबसे महत्वपूर्ण है और सड़क बंद होने की स्थिति में उसे लंबे समय तक इंतजार न करना पड़े।

उन्होंने पेयजल विभाग को आपदा से प्रभावित पेयजल लाइनों को तत्काल चालू करने के निर्देश दिए। साथ ही ब्राह्मसैण क्षेत्र में लोक निर्माण विभाग के कार्यों को तेजी से पूरा करने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। आयुक्त ने पशुपालन विभाग को निर्देश दिए कि आपदा के दौरान पशुओं की सुरक्षा एवं उपचार को भी प्राथमिकता दी जाए। उन्होंने बीमार पशुओं के उपचार, पशु चिकित्सा सेवाओं तथा चारे की उपलब्धता की नियमित मॉनिटरिंग करने को कहा। उन्होंने स्पष्ट किया कि आपदा प्रभावित क्षेत्रों में मानव के साथ-साथ पशुधन की सुरक्षा के लिए भी प्रभावी व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। चिकित्सा व्यवस्थाओं की समीक्षा करते हुए आयुक्त ने कहा कि आपदा के दौरान स्वास्थ्य सेवाओं के लिए क्षेत्रवार अलग-अलग आपदा प्रबंधन प्लान तैयार किया जाना चाहिए। उन्होंने गैरसैंण, फूलों की घाटी, चारधाम यात्रा मार्गों तथा अन्य संवेदनशील क्षेत्रों के लिए स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप अलग कार्ययोजना तैयार करने के निर्देश दिए। बैठक में जिलाधिकारी गौरव कुमार, पुलिस अधीक्षक सुरजीत सिंह पंवार, मुख्य विकास अधिकारी डॉ. अभिषेक त्रिपाठी, उप वन संरक्षक बद्रीनाथ प्रणाली रमेश, केदारनाथ रजत सुमन, अपर जिलाधिकारी विवेक प्रकाश, उपजिलाधिकारी राज कुमार पांडे, अलकेश नौड़ियाल सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में आयोजित हुआ जन सुनवाई कार्यक्रम

◆51 शिकायतें दर्ज की गई, मौके पर 22 समस्याओं का किया निस्तारण

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। समस्याओं का त्वरित निराकरण करने के उद्देश्य से जिलाधिकारी मयूर दीक्षित की अध्यक्षता में जिला कार्यालय सभागार में जन सुनवाई कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें विभिन्न विभागों से संबंधित 51 शिकायते दर्ज कराई गई,जिसमें से 22 समस्याओं का मौके पर निराकरण किया गया शेष समस्याओं को निस्तारण हेतु संबंधित विभागों को प्रेषित किया गया।

जिलाधिकारी मयूर दीक्षित ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि जनसुनवाई में जनता द्वारा जो भी समस्याएं दर्ज कराई जा रही है उन समस्याओं को त्वरित एवं समयबद्धता के साथ निराकरण करना सुनिश्चित करे,इसमें किसी भी प्रकार की कोई लापरवाही एवं शिथिलता नहीं बरती जानी चाहिए, शिथिलता बरती जाने पर संबंधित अधिकारियों के विरुद्ध आवश्यक करवाई सुनिश्चित की जाएगी। उन्होंने यह भी निर्देश दिए है कि जिन शिकायतों पर स्थलीय निरीक्षण किया जाना है संबंधित अधिकारी आपसी समन्वय के साथ स्थलीय निरीक्षण कर समस्या का समाधान करना सुनाश्चित करे। जिलाधिकारी ने सभी अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए है कि जनसुनवाई कार्यक्रम में क्षेत्रवासियों द्वारा जो भी समस्या दर्ज कराई जा रही है,उनका संबंधित अधिकारी शीर्ष प्राथमिकता एवं संवेदनशीलता के साथ निस्तारण करना सुनाश्चित करे। बैठक में सीएम हेल्पलाइन में दर्ज समस्याओं की समीक्षा करते हुए मुख्य विकास अधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए है कि सीएम हेल्प लाइन में जो भी शिकायते दर्ज की जा रही है, उनको सभी अधिकारी संवेदनशीलता के साथ निरंकरण करना सुनिश्चित करे,उन्होंने निर्देश दिए है कि 36 दिन से अधिक जो भी शिकायते लंबित है उनका निराकरण तत्परता से करना सुनिश्चित करे। जिसमें एल 1 पर 537 शिकायतें तथा एल 2 पर 115 शिकायतें निस्तारण हेतु लंबित है,जिन्हें शीघ्र निस्तारण के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए गए। बैठक मे मुख्य विकास अधिकारी डॉ. लालित नारायण मिश्र, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. आर के सिंह, अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) जितेंद्र कुमार, अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) वैभव गुप्ता, परियोजना निर्देशक नलिनीत घिल्डियाल,जिला विकास अधिकारी कमलेश कुमार पंत, लोनिवि अधिशासी अभियंता योगेश कुमार ,सहित अन्य विभागों के अधिकारी भी मौजूद रहे।

पुलिस लाइन में हर्षोल्लास व धूमधाम के साथ आयोजित हुआ तीज उत्सव

संवाददाता

उत्तरकाशी। पुलिस अधीक्षक श्रीमती कमलेश उपाध्याय के निर्देशन में पुलिस द्वारा पुलिस लाइन ज्ञानसू, में नारी सम्मान, सशक्तिकरण एवं लोक संस्कृति के संरक्षण को समर्पित भव्य हरियाली तीज उत्सव का आयोजन किया गया।

आज यहां हरियाली तीज के अवसर पर पुलिस अधीक्षक उत्तरकाशी, श्रीमती कमलेश उपाध्याय के निर्देशन में उत्तरकाशी पुलिस द्वारा पुलिस लाइन ज्ञानसू, उत्तरकाशी में नारी सम्मान, सशक्तिकरण एवं लोक संस्कृति के संरक्षण को समर्पित भव्य हरियाली 'तीज उत्सव' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में उत्तरकाशी पुलिस की महिला अधिकारी एवं कर्मचारी, पुलिस परिवार की महिलाएं एवं बालिकाओं सहित न्याय विभाग, प्रशासन, अभियोजन, अधिवक्ता वर्ग एवं विभिन्न संगठनों से जुड़ी महिलाओं ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया। कार्यक्रम में महिलाओं की प्रतिभा, आत्मविश्वास और सांस्कृतिक विरासत का सुंदर संगम देखने को मिला। कार्यक्रम का शुभारंभ पुलिस अधीक्षक उत्तरकाशी, श्रीमती कमलेश उपाध्याय के साथ उपस्थित विशिष्ट अतिथि श्रीमती जयश्री राणा, सिविल जज, श्रीमती करिश्मा डंगवाल, सिविल जज, श्रीमती मुक्ता मिश्रा, अपर जिलाधिकारी उत्तरकाशी, सुश्री शालिनी नेगी, उपजिलाधिकारी भटवाड़ी, श्रीमती तनु वर्मा पत्नी सचिन कुमार (सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, उत्तरकाशी), श्रीमती पूनम, एडीजीसी, श्रीमती अर्चना, एपीओ, श्रीमती राजकुमारी रमोला, अधिवक्ता/सदस्य ऐच्छिक ब्यूरो समिति, डॉ. अनामिका सोनी, प्रवक्ता पीजी कॉलेज उत्तरकाशी, श्रीमती नीतू राज, प्रवक्ता पीजी कॉलेज उत्तरकाशी, श्रीमती समीक्षा सूरी, योगाचार्य, श्रीमती रजनी राजपूत, गढ़वाली गायिका आदि द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इसके पश्चात तीज क्वीन, विशेष प्रतिभा एवं मेहंदी प्रतियोगिता सहित विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सभी प्रतिभागी महिलाएं पारंपरिक भारतीय परिधान में कार्यक्रम में शामिल हुईं और अपनी प्रतिभा एवं रचनात्मकता का शानदार प्रदर्शन किया। प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों ने पूरे उत्साह और आत्मविश्वास के साथ भाग लिया। हरियाली तीज महोत्सव के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में महिलाओं एवं बालिकाओं ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग कर अपनी प्रतिभा, रचनात्मकता एवं हुनर का शानदार प्रदर्शन किया। तीज क्वीन प्रतियोगिता में श्रीमती प्रीति राणा- प्रथम, उपनिरीक्षक निर्मल भट्ट- द्वितीय, महिला आरक्षी सीमा चौहान- तृतीय स्थान पर रहे। वहीं विशेष प्रतिभा प्रतियोगिता में श्रीमती वंदना शर्मा प्रथम, श्रीमती समीक्षा सूरी द्वितीय, महिला फायरमैन किरन तृतीय स्थान पर रहे। मेहंदी प्रतियोगिता में महिला फायरमैन शीतल प्रथम, कु. प्रियंका चमोली द्वितीय, श्रीमती अंजना- तृतीय पर रहे। प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली विजेता प्रतिभागियों को उपस्थित अतिथिगणों द्वारा आकर्षक पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। इसके साथ ही प्रतिभा एवं हुनर को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से श्रीमती प्रियंका, कु. रिवाली तोमर, कु. आरुषी, कु. आराध्या एवं श्रीमती दीपिका मैठानी को विशेष प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए। कार्यक्रम में विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, पारंपरिक नृत्य एवं लोक संस्कृति से जुड़े कार्यक्रमों ने समां बांध दिया। महिलाओं ने पारंपरिक तीज गीतों एवं नृत्य का आनंद लिया तथा तीज के झूले पर झूलकर पर्व की खुशियां साझा कीं। पूरे कार्यक्रम के दौरान पुलिस लाइन का वातावरण उत्साह, उमंग और उल्लास से सराबोर रहा। पुलिस अधीक्षक उत्तरकाशी, श्रीमती कमलेश उपाध्याय द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों, अधिकारियों, पुलिस कर्मियों, महिलाओं एवं बालिकाओं को हरियाली तीज की हार्दिक शुभकामनाएं दीं गयी तथा कार्यक्रम को सफल एवं भव्य बनाने में सहयोग देने वाले सभी लोगों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि "हरियाली तीज केवल एक पर्व नहीं, बल्कि हमारी समृद्ध लोक संस्कृति, प्रकृति के प्रति प्रेम और नारी शक्ति के सम्मान का उत्सव है। इसका धार्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व हमारी परंपराओं और विरासत को और समृद्ध बनाता है।" ऐसे आयोजन महिलाओं को अपनी प्रतिभा एवं हुनर को मंच प्रदान करने के साथ-साथ आपसी सौहार्द, आत्मविश्वास एवं सशक्तिकरण को बढ़ावा देते हैं। उत्तरकाशी पुलिस भविष्य में भी सामाजिक एवं सांस्कृतिक सरोकारों से जुड़े ऐसे आयोजनों को प्रोत्साहित करती रहेगी। कार्यक्रम में मंच का संचालन उनि श्रीमती गीता एवं महिला आरक्षी श्रीमती सीमा चौहान द्वारा किया गया।

शब्द सामर्थ्य -039

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. तकलीफ, कष्ट, कठिनाई, परेशानी 3. सरल, सहज 6. ज्ञान प्राप्त करना, शिक्षा लेना 7. विवश, लाचार 8. अत्यधिक ठंडा, सुस्त 9. अच्छे ढंग में गाया जाने वाला सुंदर गीत 11. सूर्य, सूरज 13. वस्त्र आदि धारण कराना 15. अप्रसन्न, नाखुश 16. खिंचाव, आकर्षण शक्ति (उ.) 18. एक रंग, आसमानी रंग 22. सेवा-सत्कार, आवभगत 23. सर्प, सांप, लकड़ी आदि की मूर्ति बनाना।

ऊपर से नीचे

1. ह्रदर, उर 2. शिष्टता, भद्रता, विवेक (उ.) 3. अंततः, अंततोगत्वा 4. अच्छी शिक्षा, नेक सलाह 5. आवागमन, गमनागमन 7. पुरुष 8. घोड़े की तेज चाल, तेज गति की दौड़ 10. लूटपाट, डकैती 12. बबार्दी, तबाही 14. नासिका, श्वसनइंद्रीय 17. आखेटक, अरेही 19. योग्य, काबिल 20. कामदेव की पत्नी, प्रेम, आनंद 21. रात्रि, निशा।

1		2	■	3		4	■	5
	■		■		■	6		
■	7				■		■	
8		■	■		■	9	10	
	■	■	■	11	12	■		■
13			14	■	15			■
	■	■	16	17		■	18	19
■	20	■	■		■	21	■	
22					■	23		

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 38 का हल

चु	स्त	■	मु	■	सं	स्था	न	■
ग	■	म	र्दा	न	गी	■	त	म
ली	प	ना	■	■	त	न	■	■
■	ना	ना	■	■	■	■	ज	■
मा	ह	■	रा	■	सा	ज	न	■
न	■	स	ह	दे	व	■	म	द
व	■	म	■	व	न	ज	■	ल
ता	क	त	व	र	■	मी	■	द
■	ल	ल	क	■	क	र	त	ल

लाल लिपस्टिक का इतिहास जानकर हैरान रह जाएंगी आप!

कई महिलाएं लाल लिपस्टिक का इस्तेमाल करती हैं। यह न केवल उन्हें आत्मविश्वास देती है, बल्कि उनके लुक में भी चार चांद लगा देती है। हालांकि, क्या आप जानती हैं कि लाल लिपस्टिक का इतिहास कितना पुराना और दिलचस्प है? प्राचीन मिस्र से लेकर आज के फैशन तक, लाल लिपस्टिक ने कई बदलाव देखे हैं। आइए जानते हैं कि लाल लिपस्टिक के पीछे की कहानी क्या है और यह कैसे एक फैशन आइकन बन गई।

प्राचीन मिस्र में था लाल लिपस्टिक का प्रचलन : प्राचीन मिस्र में लाल लिपस्टिक का उपयोग आम था। क्लियोपेट्रा जैसी राजकुमारियों ने इसे अपने चेहरे को सजाने के लिए इस्तेमाल किया था। इस लाल रंग को बनाने के लिए वे कीटाणु, कीड़े और पौधों के हिस्सों का उपयोग करती थीं। यह रंग न केवल उनके चेहरे को सुंदर बनाता था, बल्कि इसे धूप और अन्य मौसम की मार से भी बचाए रखने में मदद करता था। यह लाल रंग उनके सामाजिक स्थान को भी दर्शाता था।

मध्यकालीन यूरोप में था लाल लिपस्टिक का विरोध : मध्यकालीन यूरोप में लाल लिपस्टिक का उपयोग महिलाओं के लिए मुश्किल भरा था। धार्मिक नेताओं ने इसे शैतानी जादू मानकर इसका विरोध किया और इसे पहनने वालों को सजा देने तक की धमकी दी। इसके बावजूद कई महिलाएं इसे अपना आकर्षण बढ़ाने के लिए इस्तेमाल करती थीं। इस समय लाल लिपस्टिक को सामाजिक स्थिति और आकर्षण का प्रतीक माना जाता था, जिससे इसे पहनने वाली महिलाओं को सम्मान मिलता था।

विक्टोरियन युग में हुआ बदलाव : विक्टोरियन युग में लाल लिपस्टिक का उपयोग अधिक प्रचलित हो गया था, लेकिन इसे सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया जाता था। महिलाएं इसे छिपकर लगाती थीं, ताकि समाज की नजर न पड़े। इस समय तक लाल लिपस्टिक बनाने के लिए प्राकृतिक सामग्रियों का उपयोग किया जाता था, जैसे कि गुलाब की पंखुड़ियां और मोम। विक्टोरियन महिलाओं ने इसे आकर्षण बढ़ाने के लिए इस्तेमाल किया, भले ही उन्हें इसके लिए सामाजिक आलोचना का सामना करना पड़ा हो।

20वीं सदी में बढ़ी लाल लिपस्टिक की प्रसिद्धि : 20वीं सदी में लाल लिपस्टिक ने आधुनिक रूप धारण किया, जब अमेरिकी व्यवसायी एलिजाबेथ आर्डेन ने इसे बाजार में पेश किया। उन्होंने इसे छोटे ट्यूब में पैक किया, ताकि महिलाएं आसानी से इस्तेमाल कर सकें। इसके बाद कई ब्रांड ने भी इस उत्पाद को अपने संग्रह में शामिल किया। इस दौरान लाल लिपस्टिक ने महिलाओं के आत्मविश्वास को बढ़ावा देने और उन्हें स्वतंत्रता का अहसास कराने में अहम भूमिका निभाई।

बालों के झड़ने की समस्या से राहत दिलाने में सहायक है प्रायरिन, जानिए इससे जुड़े भ्रम

बालों का झड़ना एक आम समस्या है, जो पुरुषों और महिलाओं, दोनों को प्रभावित करती है। इस समस्या के समाधान के लिए बाजार में कई उत्पाद उपलब्ध हैं, जिनमें से एक है प्रायरिन। यह एक विटामिन और खनिज पूरक है, जिसे बालों की सेहत सुधारने के लिए बनाया गया है। आइए आज हम आपको प्रायरिन से जुड़ी कई भ्रांतियों के बारे में विस्तार से बताते हैं, ताकि आप इस पूरक का सही उपयोग कर सकें।

क्या सच में बालों को तेजी से बढ़ाता है प्रायरिन?

प्रायरिन के बारे में सबसे बड़ी भ्रांति यह है कि यह तुरंत बालों की लंबाई बढ़ाता है। सच यह है कि किसी भी पूरक के परिणाम तुरंत नहीं दिखाई दे सकते हैं। प्रायरिन में मौजूद विटामिन और खनिज बालों की जड़ों को मजबूत करते हैं और उन्हें स्वस्थ रखते हैं, लेकिन इसका असर धीरे-धीरे दिखाई देता है। नियमित उपयोग से ही आपको इसके फायदे मिलेंगे और विशेषज्ञ की सलाह से ही सही इस्तेमाल किया जा सकेगा।

पुरुषों और महिलाओं के लिए समान रूप से फायदेमंद है प्रायरिन?

कुछ लोग मानते हैं कि प्रायरिन केवल पुरुषों के लिए ही फायदेमंद होता है, जबकि महिलाओं के लिए इसका कोई असर नहीं होता। यह पूरी तरह से गलत धारणा है। प्रायरिन दोनों के लिए समान रूप से फायदेमंद होता है। इसमें मौजूद विटामिन और खनिज महिलाओं के बालों की भी सेहत सुधार सकते हैं। इसलिए, इसे लेने से पहले किसी विशेषज्ञ से सलाह लेना जरूरी है, ताकि सही और जरूरी जानकारी मिल सके।

क्या प्रायरिन खाने से रोक सकते हैं बालों का झड़ना?

प्रायरिन खाने से बालों का झड़ना रोकने में मदद मिलती है, लेकिन यह अकेले ही पूरी समस्या का समाधान नहीं कर सकता। इसके साथ-साथ सही खान-पान, नियमित व्यायाम और उचित देखभाल भी जरूरी होती है। प्रायरिन में बायोटिन, जिंक और विटामिन जैसे तत्व होते हैं, जो बालों की सेहत के लिए अहम होते हैं। हालांकि, इन्हें अन्य उपायों के साथ मिलाकर ही प्रभावी बनाया जा सकता है। इसलिए, इसे एक संतुलित आहार और जीवनशैली के साथ लेना चाहिए।

प्रायरिन का सेवन बिना डॉक्टर की सलाह के करना है सुरक्षित?

किसी भी पूरक का सेवन बिना डॉक्टर की सलाह के करना सुरक्षित नहीं माना जाता। प्रायरिन भी एक ऐसा ही उत्पाद है, जिसे लेने से पहले डॉक्टर की सलाह लेना जरूरी होता है।

डॉक्टर आपकी स्थिति और जरूरतों के अनुसार ही इसे लेने की सलाह देंगे।

इस तरह की सावधानी बरतना हमेशा बेहतर होता है, ताकि आपको किसी तरह की समस्या न हो और आप इसका सही तरीके से उपयोग कर सकें।

लाल जोड़े में मोनालिसा ने ढाया कहर, बोल्ड ब्राइडल फोटोशूट ने बढ़ाया इंटरनेट का तापमान

भोजपुरी से लेकर टीवी इंडस्ट्री तक अपनी पहचान बना चुकी मोनालिसा अक्सर अपनी बोल्ड अदाओं से इंटरनेट पर तहलका मचाती रहती हैं। मोनालिसा ने एक बार फिर सोशल मीडिया का तापमान बढ़ा दिया है। हाल ही में उन्होंने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम अकाउंट पर पारंपरिक दुल्हन के अवतार में अपनी कुछ बेहद खूबसूरत तस्वीरें साझा की हैं।

तस्वीरों में मोनालिसा का ग्लैमर और देसी अंदाज इस कदर निखर कर आ रहा है कि देखने वाले अपनी नजरें नहीं हटा पा रहे हैं। मोनालिसा ने इस फोटोशूट के लिए एक शाही लाल रंग का ब्राइडल लहंगा चुना है। मोनालिसा ने लहंगे के साथ मैचिंग डीप-नेकलाइन सिल्क ब्लाउज कैरी किया है, जिसपर गोल्डन जरी और फ्लोरल कढ़ाई का बारीक काम किया गया है। इसके साथ उन्होंने सिर पर लाल रंग का नेट दुपट्टा कैरी किया है, जिस पर सुनहरी बूटी और हैवी गोटा-पट्टी बॉर्डर है।

तस्वीरों में मोनालिसा की अदाएं और उनके सेक्सी पोज फैंस के दिलों पर छुरियां चला रहे हैं। कुछ तस्वीरों में वह शर्माती हुई नीचे की ओर देख रही हैं, तो कुछ में वह कैमरे की तरफ देखकर अपनी कातिल मुस्कान बिखेर रही हैं।

अपने लुक को कम्पलीट करने के लिए मोनालिसा ने परफेक्ट ग्लैम ब्राइडल मेकअप चुना है। स्मोकी आइज, विंग्ड आईलाइनर और मस्कारा के साथ उनकी आंखें बेहद नशीली लग रही हैं। डार्क रेड लिपस्टिक उनके पूरे चेहरे को ग्लोइंग बना रही है। ज्वेलरी की बात करें तो उन्होंने ट्रेडिशनल ब्राइडल लुक को पूरा करने के लिए हैवी कुंदन और गोल्ड ज्वेलरी कैरी की है। उनके माथे पर सजी खूबसूरत शीशपट्टी और मांगटीका, कानों में बड़े झुमके, गले में मैचिंग हेवी चोकर नेकलेस और लेयर्ड रानी हार उनके रॉयल लुक को निखर रहे हैं।

अभिनेत्री आकांक्षा चमोला दोबारा नहीं करेंगी शादी!

अभिनेता गौरव खन्ना से तलाक और खुद के बायसेक्शुअल होने की चर्चाओं के बाद अभिनेत्री आकांक्षा चमोला ने कहा है कि वह दोबारा शादी नहीं करेंगी।

फराह खान और रितेश देशमुख के होस्ट किए जाने वाले नेटफ्लिक्स शो लॉक अप-सच या सजा के हालिया एपिसोड में आकांक्षा अपनी करीबी दोस्त पामेला सेरेना के साथ जेल में दिल की बातें करती नजर आईं। आकांक्षा ने पामेला से कहा कि जब उनकी शादी गौरव खन्ना से हुई थी, तब उनकी उम्र 24 साल थी। इस पर पामेला ने कहा कि वह अभी भी युवा हैं और उन्हें आगे चलकर कोई अच्छा जीवनसाथी मिल सकता है।

आकांक्षा ने जवाब दिया, नहीं, मैं दोबारा शादी नहीं करना चाहती। मेरा मन अब शादी से भर गया है। लेकिन जिंदगी में पहली बार मैं अकेले रहूंगी। न मैं अपने माता-पिता के घर रहूंगी और न ही पति के घर। मेरा अपना घर होगा और मैं आगे की जिंदगी अकेले ही बिताऊंगी।

फिलहाल शो में आकांक्षा चौधरी, योगेश रावत, सुनीता आहूजा, राम कपूर, श्रेया कालरा, शिवांगी जोशी, हर्षद चोपड़ा, सूफी मोतीवाला, धीरज धूपर, माधुरी जैन ग्रोवर, रियाज अली और वरुण यादव उर्फ लेला जैसे कई लोकप्रिय चेहरे नजर आ रहे हैं।

जजमेंट डे के दौरान आकांक्षा ने खुलासा किया कि वह बायसेक्शुअल हैं। उन्होंने यह भी बताया कि गौरव से शादी से पहले उनके महिलाओं के साथ रिश्ते रह चुके हैं।

इस बारे में पूछे जाने पर आकांक्षा चमोला ने कहा, मैं शादी से पहले उभयलिंगी थी। मेरे रिश्ते कुछ लड़कियों के साथ हैं। बहुत ज्यादा अंतरंग संबंध नहीं रह रहे हैं लेकिन मैं कुछ महिलाओं के साथ संबंधों में रही हूं।

उन्होंने बताया कि उन्हें महिलाओं के साथ ज्यादा सहज महसूस होता है और उनकी संगति में वह खुद को बेहतर महसूस करती हैं।

नल लगे, टंकियां बनीं, पानी के बिल भेजे जा रहे..फिर भी ग्रामीण प्यासे

कोटद्वार(आरएनएस)। नैनीडांडा ब्लॉक के अंतर्गत ग्रामसभा बखरोटी और कमेड़ा में 'हर घर जल, हर घर नल' योजना ग्रामीणों के लिए परेशानी का सबब बनी है। ग्रामीणों का आरोप है कि चार साल से चल रहे कार्य के बावजूद योजना का लाभ उन्हें नहीं मिल पा रहा है। पेयजल संकट से जूझ रहे ग्रामीणों ने जिलाधिकारी को ज्ञापन भेजकर योजना की उच्चस्तरीय जांच और तत्काल पेयजल आपूर्ति बहाल कराने की मांग की हैग्रामीणों के अनुसार, योजना के तहत कई स्थानों पर नई पाइप लाइनों को जमीन के ऊपर ही बिछा दिया गया है। कई जगह पुरानी पेयजल योजना की पतली पाइप लाइनों से नई जोड़कर काम पूरा दिखाने का आरोप लगाया गया है। गांवों में बनाई गई पानी की टंकियों में भी रिसाव की शिकायत हैवहीं, बिना कनेक्शन के स्टैंड पोस्ट बना दिए गए हैं। स्रोत पर बनाए गए फिल्टर और चैंबर भी निर्माण के दो साल के भीतर ही क्षतिग्रस्त हो गए। पूर्व प्रधान सुरेंद्र सिंह रावत समेत ग्रामीणों का कहना है कि उन्होंने विभागीय अधिकारियों से कई बार शिकायत की लेकिन समस्या का समाधान नहीं हुआ। आरोप है कि पिछले तीन वर्षों से ग्रामीण पेयजल संकट झेल रहे हैं। यहां तक कि पानी की आपूर्ति नहीं होने के बावजूद ग्रामीणों को पानी के बिल भेजे जा रहे हैं। मुख्यमंत्री हेल्पलाइन पर शिकायतों के बावजूद भी स्थिति में सुधार नहीं हुआ। ग्रामीणों ने यह भी आरोप लगाया कि योजना में काम करने वाले श्रमिकों की मजदूरी का भुगतान ठेकेदारों की ओर से अब तक नहीं किया गया है।

पथरी क्षेत्र में लगातार बिजली कटौती से ग्रामीण परेशान

हरिद्वार(आरएनएस)। पथरी क्षेत्र के करीब 30 गांवों में अघोषित बिजली कटौती से ग्रामीण परेशान हैं। बीती रात भी बिजली की आंखमिचौली जारी रही। बार-बार बिजली गुल होने से ग्रामीणों के रोजमर्रा के काम प्रभावित हो रहे हैं, जबकि किसानों को फसलों की सिंचाई में दिक्कत आ रही है। घोसीपुरा, डोगीवाला, धनपुरा, अंबुवाला, घिस्सुपुरा, झबरी, पथरी, टिहरी विस्थापित, पुरुषोत्तम नगर, आदर्श नगर, पदार्था, सुगरस्सा, धिनारपुर, रानीमाजरा, शाहपुर और बादशाहपुर समेत करीब 30 गांवों के ग्रामीण और किसान बिजली कटौती की मार झेल रहे हैं। ग्रामीणों के अनुसार दिन और रात में लगातार बिजली की आंखमिचौली चल रही है। कई बार बिजली जाने के बाद लंबे समय तक आपूर्ति सुचारू नहीं हो पातीग्रामीणों का आरोप है कि ऊर्जा निगम के ढीले रवैये के कारण समय पर बिजली आपूर्ति बहाल नहीं हो रही है। अधिकारियों से शिकायत करने पर बिजली कटौती को ब्रेकडाउन या रोस्टिंग बताकर पल्ला झाड़ लिया जाता है। ग्रामीण तंजीम अली, साजिद अली, सोनू, मोहम्मद सलीम, सोहनवीर, रामकिशोर, नितीन, दीपक, रामकुमार, जीसान, ललित कुमार, प्रेम सिंह, इरशाद अली, रहमान, मांगेराम, रवि कुमार, नरेश कुमार, इसरार, गफ्फार अहमद और अब्बास अली आदि ने बिजली कटौती बंद नहीं होने पर आंदोलन की चेतावनी दी है।

सू- दोकू क्र.039

	2		6		8		3	
9		8		3		4		
							5	
5		2			7		6	
	8		4			1		3
				9				
8			9				1	
	5			1		6		2
		1	7				4	

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.38 का हल

2	6	3	8	1	4	9	7	5
9	5	4	2	6	7	3	1	8
8	7	1	9	3	5		6	2
6	2	7	5	4	8	4	3	9
3	9	8	6	7	1	2	5	4
4	1	5	3	2	9	6	8	7
5	3	2	4	8	6	7	9	1
1	8	6	7	9	2	5	4	3
7	4	9	1	5	3	8	2	6

गढ़वाल आयुक्त ने किया जिला कार्यालय के अनुभागों का निरीक्षण, व्यवस्थाओं को लेकर दिए आवश्यक निर्देश

हमारे संवाददाता

चमोली। आयुक्त गढ़वाल मंडल, आनन्द स्वरूप ने आज जिला कार्यालय गोपेश्वर के विभिन्न प्रमुख अनुभागों का निरीक्षण किया। उन्होंने न्यायिक अनुभाग, राजस्व अनुभाग, संग्रह अनुभाग, भूलेख अनुभाग, नजारत अनुभाग, मालखाना, स्टोर कक्ष एवं संग्रहालय का निरीक्षण कर संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों से कार्यों की प्रगति और व्यवस्थाओं की जानकारी ली।

न्यायिक अनुभाग के निरीक्षण के दौरान उन्होंने पटल पर लंबित प्रकरणों की स्थिति की जानकारी लेते हुए पुराने प्रकरणों का समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने लाइसेंसों के सत्यापन तथा शस्त्र लाइसेंस से संबंधित प्रकरणों की भी जानकारी ली और पेंडेंसी को प्राथमिकता के आधार पर दूर करने के निर्देश दिए। राजस्व अनुभाग के निरीक्षण के दौरान आयुक्त ने निर्देश दिए कि किसी भी स्तर पर प्रकरण लंबित न रहें तथा पत्रावलियों के डिस्पैच में अनावश्यक विलंब न हो। उन्होंने अधिकारियों को कार्यों की नियमित मॉनिटरिंग करने के निर्देश दिए। संग्रह अनुभाग में उन्होंने भू-राजस्व जमा एवं वसूली की स्थिति की जानकारी लेते हुए संबंधित दस्तावेजों का अवलोकन किया। उन्होंने निर्देश दिए कि भू-राजस्व वसूली से संबंधित रिपोर्ट दस्तावेजों के आधार पर तैयार हो तथा रिपोर्ट में दर्ज आंकड़ों का संबंधित अभिलेखों से विधिवत सत्यापन एवं मिलान सुनिश्चित किया जाए। भूलेख अनुभाग, नजारत अनुभाग एवं स्टोर कक्ष के निरीक्षण के दौरान उन्होंने अभिलेखों के रख-रखाव, कार्यालय व्यवस्थाओं एवं साफ-सफाई का जायजा लिया। उन्होंने स्टोर एवं अन्य कार्यालय परिसरों में साफ-सफाई की व्यवस्था को व्यवस्थित बनाए रखने के निर्देश दिए।

आयुक्त ने मालखाने एवं जिला संग्रहालय का भी निरीक्षण किया तथा वहां अभिलेखों, सामग्री एवं अन्य व्यवस्थाओं की जानकारी ली। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को अभिलेखों एवं सामग्री के सुरक्षित और व्यवस्थित रख-रखाव के निर्देश दिए।

इसके पश्चात आयुक्त, आनन्द स्वरूप ने जिला आपदा परिचालन केंद्र का भी निरीक्षण किया। उन्होंने आपदा की स्थिति में सूचना संकलन, त्वरित संचार एवं समन्वय से संबंधित व्यवस्थाओं की जानकारी लेते हुए आपदा के दौरान सभी संबंधित विभागों के बीच प्रभावी समन्वय बनाए रखने के निर्देश दिए। इस दौरान जिलाधिकारी गौरव कुमार, पुलिस अधीक्षक सुरजीत सिंह पंवार, मुख्य विकास अधिकारी डॉ. अभिषेक त्रिपाठी, अपर जिलाधिकारी विवेक प्रकाश, उपजिलाधिकारी राज कुमार पांडे सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

पेड़ों पर महिलाओं ने रक्षा सूत्र बांधकर बचाने का लिया संकल्प

नई टिहरी(आरएनएस)। अदवाणी के जंगल में फायर लाइन काटने के नाम चीड़ के हरे पेड़ों के कटान के विरोध में हेंवल घाटी की महिलाओं ने घन लगे पेड़ों पर रक्षा सूत्र बांधकर उन्हें बचाने का संकल्प लिया।नरेंद्रनगर विधानसभा क्षेत्र के अदवाणी के जंगल को बचाने के लिए हेंवल घाटी की महिला संगठनों, चिपको आंदोलन कार्यकर्ताओं के साथ विभिन्न संगठनों से जुड़े लोगों ने सरकार से शीघ्र पेड़ों के कटान पर रोक लगाने की मांग की है। चिपको नेत्री सुदेशा बहन के नेतृत्व में महिलाओं ने अदवाणी के जंगल जाकर लोगों से पेड़ों को बचाने की अपील की।कहा कि अदवाणी का जंगल चिपको आंदोलन के लिए विख्यात रहा है। उन्होंने युवा पीढ़ी से जंगल बचाने के लिए आगे आने को कहा। बीज बचाओ आंदोलन के प्रणेता विजय जड़धारी ने कहा कि फायर लाइन काटने के नाम उत्तराखंड के जंगलों को कटाने की साजिश की जा रही है। ग्राम प्रधान विजय भंडारी ने वन विभाग पर बिना ग्राम पंचायत को सूचना दिए जंगल कटाने का आरोप लगाया।

जिला पंचायत सदस्य शीशपाल सजवाण ने कहा कि किसी कीमत पर अपने जंगल को नहीं कटने देंगे। इसके लिए यदि लंबा संघर्ष करना पड़े तो वह पीछे नहीं हटाएंगे। सामाजिक कार्यकर्ता धूम सिंह मंद्रवाल ने कहा कि अदवाणी का जंगल क्षेत्र के लोगों की विरासत है। अरण्य रंजन ने कहा कि फायर लाइन के नाम जंगल काटने की जांच कर दोषियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की मांग उठाई। सामाजिक कार्यकर्ता किशन सिंह रावत ने कहा कि अदवाणी के जंगल बचाने के क्षेत्र से आए ग्रामीणों की वजह से अदवाणी के लोगों का मनोबल और मजबूत हुआ है। इस मौके पर संदीप पैन्यूली, फूलदास डौडिंया, सुविधा देवी, रोशनी देवी, सरिता मनवाल, सुनीता भंडारी, प्रतिमा देवी, समीरा आदि मौजूद रही।

संन्यासी प्रजा और हर समाज के हितैषी: स्वामी यतीश्वरानंद

हरिद्वार (आरएनएस)। वेद मंदिर आश्रम में हुई बैठक में सभी संन्यासी सभासदों ने वेदों सहित संस्कारवान शिक्षा, नशे एवं कुरुतियों से दूर रहने, परिवार में अच्छे गुणों के साथ आगामी पीढ़ियों को संस्कारवान बनाने पर जोर दिया। पूर्व कैबिनेट मंत्री स्वामी यतीश्वरानंद ने कहा कि संन्यासियों को गांव-गांव पहुंचकर स्कूलों में वेदों का प्रचार करते हुए संस्कारवान शिक्षा और नशा एवं कुरुतियों के खिलाफ युवा पीढ़ी को जागरूक करना है। उन्होंने कहा कि संन्यासियों को एक मंच पर लाकर उनमें एकरूपता लाकर मानवता के लिए कार्य करना ही उनका ध्येय होना चाहिए। वेद मंदिर आश्रम में आर्य समाज के संन्यासियों की महत्वपूर्ण बैठक हुई। जिसमें पूर्व कैबिनेट मंत्री स्वामी यतीश्वरानंद ने कहा कि आर्य समाज में युवा संन्यासियों का अभाव है। संन्यासी प्रजा के हितैषी हैं। सभी संन्यासियों को एक मंच पर लाने का काम महत्वपूर्ण है और उन्हें आर्य समाज के सिद्धांतों के अनुसार तैयार करते हुए समाजों के फैली विसंगितयों को दूर कराने का काम सौंपा जाए, ताकि युवा पीढ़ियां भ्रमित न हो, बल्कि संस्कारवान हो। उन्होंने कहा कि इसके लिए भी रूपरेखा बनाने की जरूरत है। शिक्षा में कुछ कुरुतियां है, मानव मन में जो भ्रष्टाचार पनप रहा है उसे भी दूर करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि सरकार जो निर्णय एक घंटे में ले सकती है, उसे पारित करने के लिए जनता को लंबे समय तक आंदोलन करना पड़ता है, लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए। उन्होंने संन्यासियों का चरित्र उत्तम होने की बात कहते हुए कहा कि उन्हें गुटों में नहीं बटना चाहिए। युवाओं को केंद्रित करते हुए शिक्षा, चिकित्सा के साथ संसाधनों के नियम तय करने होंगे। स्वामी योगेश्वरानंद ने कहा कि संस्कारों को जगाने की जरूरत है। आगामी पीढ़ी के परिवार पर ही संस्कारवान शिक्षा, परिवार के अच्छे गुण, चरित्र निर्भर है। उन्होंने दोबारा से गुरुकुल पद्धति शिक्षा को अपनाने पर जोर दिया। संचालन करते हुए स्वामी ओमानंद ने कहा कि जय बोलने का मतलब है कि महापुरुषों के सिद्धांतों को अपने जीवन में अनुशरण कर उनका आचरण करें। संन्यासी अंधकार से उजाला की ओर ले जाते हैं। संन्यासियों को मानसिक गुलामी से भी दूर होना होगा और मानवता की भलाई के लिए काम करें। उन्होंने कहा कि दवा से तो कोई भी ठीक कर सकता है लेकिन उसका कारण भी ढूंढना चाहिए।बैठक में संन्यासियों में स्वामी सुरेंद्रानंद, स्वामी चेतनानंद, भगवान देव, शिव मुनि, प्राणदेव, शुद्ध बोधानंद, सोमानंद, चेतन देव, स्वामी योगेश्वरानंद, कृष्णानंद, मेघानन्द, वेदामृतानंद, विशेषानंद, प्रेममुनि, स्वामी भगवानदेव, स्वामी चेतरूप आदि गणमान्य संन्यासी शामिल हुए।

ज्वेलरी की दुकानों में लगी भीषण आग, मची अफरातफरी

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। साबिर पाक के सालाना उर्स के बीच बीती रात दरगाह पहाड़ी गेट के पास अजमेरी बाजार में ज्वेलरी की दुकानों में संदिग्ध परिस्थितियों में आग लग गई। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप ले लिया और बाजार में अफरातफरी मच गई। आग की लपटें उठती देख स्थानीय लोग मौके पर जुट गए और पुलिस के साथ मिलकर आग पर काबू पाने का प्रयास शुरू कर दिया।

बताया जा रहा है कि आग लगने के बाद मौके पर मौजूद लोगों ने तत्काल पुलिस को सूचना दी, लेकिन करीब 20 मिनट तक दमकल की टीम मौके पर नहीं पहुंच सकी। इस दौरान आग तेजी से फैलती रही, जिससे आसपास की दुकानों में भी आग लगने का खतरा पैदा हो गया। स्थानीय लोगों ने पानी और उपलब्ध संसाधनों के सहारे आग बुझाने का प्रयास किया। उर्स के चलते कलियर में इन दिनों जायरीनों की भारी भीड़ है। ऐसे में बाजार के बीच दुकानों में आग लगने से मौके पर भारी भीड़ जमा हो गई और कुछ देर के लिए अफरातफरी का माहौल बन गया। सूचना मिलते ही कोतवाली प्रभारी निरीक्षक कमल मोहन भंडारी पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे और स्थिति को संभाला। करीब 20 मिनट बाद दमकल की टीम मौके पर पहुंची, जिसके बाद आग पर काबू पाने की कार्रवाई तेज की गई। आग लगने के कारणों और दुकानों में हुए नुकसान का अभी स्पष्ट पता नहीं चल सका है। आग किस वजह से लगी, यह जांच के बाद ही साफ हो सकेगा। साबिर पाक के सालाना उर्स के चलते कलियर में देशभर से बड़ी संख्या में जायरीन पहुंच रहे हैं। ऐसे संवेदनशील और भीड़भाड़ वाले समय में मुख्य बाजार में आग लगने तथा दमकल की टीम के पहुंचने में देरी को लेकर सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े हो गए हैं।

टीएचडीसी टनल रेस्क्यू अभियान जारी, एक और श्रमिक मिला

हमारे संवाददाता

चमोली। हाट-सियासैंण, मायापुर (पीपलकोटी) स्थित टीएचडीसी की निर्माणाधीन टनल में 13 अगस्त को हुई दुर्घटना के बाद लापता श्रमिकों की तलाश एवं बचाव अभियान लगातार जारी है। रेस्क्यू अभियान के दौरान एक और श्रमिक को टनल से बाहर निकाल लिया गया है, जिसे तत्काल जिला चिकित्सालय, गोपेश्वर भेजा गया है।बताया जा रहा है कि अब एक लापता श्रमिक की तलाश शेष है, जिसके लिए रेस्क्यू अभियान युद्धस्तर पर जारी है। रेस्क्यू टीमें टनल के भीतर संभावित स्थानों पर लगातार सघन सर्च अभियान चला रही हैं। रेस्क्यू कार्य में तेजी लाते हुए टनल के भीतर जमा स्लज (कीचड़/मलबे) को लगातार हटाया जा रहा है। इसके साथ ही टनल में मौजूद पानी की निकासी का कार्य भी तेजी से किया जा रहा है। सक्शन पंपों सहित अन्य आवश्यक उपकरणों की मदद से पानी एवं स्लज को हटाया जा रहा है, ताकि रेस्क्यू टीमों की आवाजाही सुगम हो सके और संभावित स्थानों तक पहुंचकर लापता श्रमिक की तलाश की जा सके।

जिला प्रशासन, पुलिस, एसडीआरएफ, एनडीआरएफ तथा संबंधित विभागों की टीमें आपसी समन्वय के साथ राहत एवं बचाव कार्य में जुटी हुई हैं। रेस्क्यू अभियान की लगातार निगरानी की जा रही है तथा अभियान को गति देने के लिए आवश्यक संसाधन एवं उपकरण मौके पर उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

रामदेव के बयान का धीरेंद्र प्रताप ने किया स्वागत

◆कहां, भाजपा नेता बताएं क्या रामदेव भी दिमागी नक्सल है

संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड कांग्रेस के वरिष्ठ उपाध्यक्ष और प्रवक्ता अधिनियम प्रताप ने स्वामी रामदेव के उस बयान का स्वागत किया है जिसमें उन्होंने कहा है कि यदि जैनजी और नौजवानों की बात नहीं सुनी गई तो मोदी सरकार के खिलाफ अगर उन्हें अनशन भी करना पड़ा तो वह करेंगे। धीरेंद्र प्रताप ने कहा कि लंबे समय के बाद स्वामी रामदेव की आत्मा जगी है और यह एक अच्छा संकेत है। उन्होंने कहा रामदेव संकल्प के पक्के माने जाते हैं और जाहिर है देश के जो हालात है उसमें इस तरह के सत्याग्रह और इस तरह के संघर्ष की आज महत्ती जरूरत है। धीरेंद्र प्रताप ने कहा कि अगर रामदेव सड़कों पर आते हैं तो निश्चित तौर पर जो विपक्षी दल है उनको भी उन पर विचार करना पड़ेगा और सरकार का जो पूरी तरह से देश में फैलियर हो चुका है उसको देखते हुए उनके संघर्ष में सहयोग करना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि देश का नौजवान हताशा में है और प्रधानमंत्री यह कहने में लगे हैं की वह लोग नक्सली भावना से पीड़ित हैं। जो आंदोलन कर रहे हैं उन्होंने भाजपा के नेताओं से कहा कि अब जब रामदेव जी स्वयं अपने बयान दे चुके हैं भाजपा के प्रवक्ताओं को बताना होगा की क्या रामदेव भी नक्सली दिमाग के हैं और सरकार के विरुद्ध जो बातें कर रहे हैं वह दिमागी नक्सल के दिमाग की ही पैदाइश हो सकती है।

उफनती नदी में पलटी मैक्स, एसडीआरएफ ने दो लोगों को बचाया

हमारे संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड में लगातार हो रही भारी बारिश के चलते नदी-नाले उफान पर हैं। इसी बीच ऋषिकेश क्षेत्र में बीन नदी का जलस्तर बढ़ने से एक बड़ा हादसा होते-होते टल गया। तेज बहाव के बीच एक मैक्स वाहन अनियंत्रित होकर नदी में पलट गया, जिसमें दो लोग फंस गए। सूचना मिलते ही एसडीआरएफ की टीम मौके पर पहुंची और रेस्क्यू अभियान शुरू किया। करीब एक घंटे तक चले चुनौतीपूर्ण रेस्क्यू ऑपरेशन के बाद दोनों लोगों को सकुशल बाहर निकाल लिया।

जानकारी के अनुसार, पुलिस चौकी पशुलोक बैराज से रात करीब 9:22 बजे सूचना मिली कि बीन नदी में एक मैक्स वाहन अनियंत्रित होकर पलट गया है। वाहन में कुछ लोगों के फंसे होने की जानकारी मिलते ही ढालवाला पोस्ट से एसडीआरएफ टीम मौके पर रवाना हुई। मौके पर पहुंचते ही एसडीआरएफ जवानों ने बिना समय गंवाए राहत एवं बचाव अभियान शुरू कर दिया। नदी का जलस्तर बढ़ा हुआ था और तेज बहाव के कारण रेस्क्यू करना बेहद चुनौतीपूर्ण था। एसडीआरएफ जवानों ने कड़ी मशक्कत के बाद वाहन में फंसे एक व्यक्ति को सुरक्षित बाहर निकाल लिया। हालांकि, दूसरा व्यक्ति अभी भी वाहन के भीतर फंसा हुआ था।

इसी दौरान नदी का बहाव लगातार तेज होता जा रहा था। तेज पानी के दबाव के कारण मैक्स वाहन भी अपनी जगह से खिसककर कुछ दूरी तक बह गया, जिससे रेस्क्यू ऑपरेशन और अधिक जोखिम भरा हो गया। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए एसडीआरएफ ने अतिरिक्त टीम को भी मौके पर बुलाया। जिसके बाद दूसरी टीम घटनास्थल पर पहुंची और पहली टीम के साथ समन्वय बनाकर रेस्क्यू अभियान को आगे बढ़ाया। तेज बहाव, बढ़ते जलस्तर और रात के अंधेरे के बीच एसडीआरएफ जवानों ने जोखिम उठाते हुए वाहन तक पहुंच बनाई। काफी मशक्कत के बाद वाहन में फंसे दूसरे व्यक्ति को भी सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया। रेस्क्यू किए गए दोनों व्यक्तियों को प्राथमिक उपचार के लिए अस्पताल भेजा गया।

स्मैक सहित एक दबोचा

हमारे संवाददाता

चम्पावत। नशा तस्करी में लिप्त एक व्यक्ति को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। जिसके पास से 12.30 ग्राम स्मैक बरामद हुई है। जानकारी के अनुसार बीती शाम कोतवाली टनकपुर पुलिस को सूचना मिली कि क्षेत्र में कोई नशा तस्कर नशीले सामान की डिलीवरी हेतु आने वाला है। सूचना पर कार्यवाही करते हुए पुलिस ने क्षेत्र में चैकिंग अभियान चला दिया। इस दौरान पुलिस को लेखराज राइस मिल की खाली भूमि के पास एक संदिग्ध व्यक्ति घूमता हुआ दिखायी दिया।

पुलिस ने जब उसे रूकने का इशारा किया तो वह सकपका कर भागने लगा। इस पर उसे घेर कर दबोचा गया। तलाशी के दौरान उसके पास से 12.30 ग्राम स्मैक बरामद हुई। पूछताछ में उसने अपना नाम राशिद पुत्र स्वर्गीय शेर मोहम्मद निवासी वार्ड नंबर 4 गफूर बस्ती कोतवाली टनकपुर जनपद चंपावत बताया।

गला कटा शव मिलने से मचा हड़कंप

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। नहर किनारे गला कटा हुआ शव मिलने से क्षेत्र में हड़कंप मच गया। सूचना मिलने पर पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर मृतक की शिनाख्त के प्रयास शुरू कर दिये है।

मामला मंगलौर कोतवाली क्षेत्र का है। यहां नहर किनारे एक व्यक्ति का गला कटा शव बरामद होने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। सूचना मिलते ही मंगलौर कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर अग्रिम कार्यवाही शुरू कर दी है। बताया जा रहा है कि मृतक की पहचान नहीं हो पायी है जिसकी शिनाख्त के प्रयास पुलिस ने शुरू कर दिये है। घटना की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने आसपास के क्षेत्र में भी जानकारी जुटाई तथा घटनास्थल से साक्ष्य एकत्र किए। जानकारी मिलने पर एसपी देहात शेखर चंद सुयाल भी मौके पर पहुंचे और घटनास्थल का निरीक्षण कर पुलिस अधिकारियों से मामले की जानकारी ली। उन्होंने पुलिस टीम को घटना के सभी पहलुओं की गहनता से जांच करने के निर्देश दिए। एसपी देहात ने बताया कि फिलहाल शव की शिनाख्त के प्रयास किए जा रहे हैं। पुलिस मामले की जांच में जुटी है और जल्द ही घटना का खुलासा किया जाएगा। घटना को लेकर पुलिस आसपास के लोगों से भी पूछताछ कर रही है।

सड़क पर आया मगरमच्छ, वीडियो वायरल!

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। धनौरी क्षेत्र में बावनदर्रा पुल के बीचोंबीच एक विशालकाय मगरमच्छ के सड़क पर आ जाने से राहगीरों में हड़कंप मच गया। सड़क पर मगरमच्छ को देखकर राहगीरों के होश उड़ गए। इस दौरान किसी राहगीर ने मगरमच्छ का वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया।

पिरान कलियर में दरगाह साबिर पाक का सालाना उर्स चल रहा है। उर्स में शामिल होने के लिए देश के कोने-कोने से जायरीन दिन-रात पिरान कलियर पहुंच रहे हैं। ऐसे में व्यस्त मार्ग पर विशालकाय मगरमच्छ के आ जाने से किसी बड़ी दुर्घटना की आशंका बनी हुई है। स्थानीय लोगों के अनुसार, मेहवड़ और धनौरी के बीच पुरानी गंगनहर से कई बार मगरमच्छ बाहर निकलकर सड़क तक पहुंच जाते हैं। इससे राहगीरों और वाहन चालकों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। रात के समय सड़क पर मगरमच्छ दिखाई न देने से हादसे का खतरा और बढ़ जाता है। उर्स के चलते इस मार्ग पर जायरीनों और वाहनों की आवाजाही लगातार बढ़ी हुई है। ऐसे में लोगों ने वन विभाग से सड़क और आबादी के आसपास दिखाई देने वाले मगरमच्छों को सुरक्षित तरीके से पकड़कर गंगनहर से दूर सुरक्षित स्थान पर छोड़ने की मांग की है। लोगों का कहना है कि समय रहते कार्रवाई नहीं हुई तो उर्स के दौरान किसी जायरीन के साथ गंभीर हादसा हो सकता है। स्थानीय लोगों ने वन विभाग से गश्त बढ़ाने और मगरमच्छों की आवाजाही वाले संवेदनशील स्थानों को चिह्नित कर प्रभावी कार्रवाई करने की मांग की है।

काकरोच के बाद अब 'दिमागी नक्सल' पार्टी

◆प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के तंज से निकली नई सियासी कहानी
◆बयान अब समर्थकों और विरोधियों की राजनीतिक पहचान
◆संसद से निकलकर राजनीति अब सोशल मीडिया में शिफ्ट
◆विरोधी पक्ष ऐसे बयानों को सत्ता के खिलाफ आक्रामक मुद्दा

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। भारतीय राजनीति में तंज, विशेषण और राजनीतिक जुमलों का इस्तेमाल कोई नई बात नहीं है, लेकिन सोशल मीडिया के दौर में यही शब्द कभी-कभी सत्ता के खिलाफ नए राजनीतिक नैरेटिव का आधार भी बन जाते हैं। काकरोच जैसे राजनीतिक तंज के बाद अब दिमागी नक्सल शब्द भी इसी तरह चर्चा में है। प्रधानमंत्री की ओर से किए गए तंज के बाद इस नाम से एक राजनीतिक मंच/समूह के गठन और उससे बड़ी संख्या में लोगों के जुड़ने के दावे ने सियासी बहस को नया मोड़ दे दिया है। यह घटनाक्रम अपने आप में इस बात का संकेत है कि आज की राजनीति केवल संसद, रैलियों और चुनावी सभाओं तक सीमित नहीं रही। सोशल मीडिया पर बोले गए एक शब्द को समर्थक अपने तरीके से राजनीतिक पहचान में बदल सकते हैं और विरोधी उसी शब्द को सत्ता के खिलाफ हथियार बना सकते हैं।

राजनीति में किसी विरोधी को निशाना बनाने के लिए दिए गए विशेषण अक्सर कुछ समय के लिए सुर्खियां बनते हैं। लेकिन जब वही शब्द विरोध करने वाले समूह की पहचान बन जाए तो मामला दिलचस्प हो जाता है। दिमागी नक्सल को लेकर सामने आए राजनीतिक प्रयोग को भी इसी नजरिए से देखा जा रहा है। समर्थकों का दावा है कि प्रधानमंत्री के तंज के बाद बड़ी संख्या में लोग इस मंच से जुड़े हैं। हालांकि इन दावों की स्वतंत्र पुष्टि और संगठन की वास्तविक सदस्य संख्या को अलग-अलग तरीके से देखना जरूरी है। सवाल यह है कि क्या यह महज सोशल मीडिया की प्रतिक्रिया है या फिर आने वाले समय में इसका कोई संगठित राजनीतिक रूप भी दिखाई देगा?

भारतीय राजनीति में कई बार किसी दल या नेता को दिए गए विरोधी के विशेषण ने ही उसकी पहचान को मजबूत किया है। राजनीतिक विरोधियों के आरोपों को पलटकर अपने पक्ष में इस्तेमाल करना चुनावी रणनीति का हिस्सा रहा है। दिमागी नक्सल को लेकर भी यही प्रयोग दिखाई देता है, जिस शब्द का इस्तेमाल आलोचना या तंज के रूप में किया गया, उसी को समर्थक राजनीतिक व्यंग्य और प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में पेश कर रहे हैं। यह सोशल मीडिया राजनीति के उस नए दौर को दिखाता है जहां नकारात्मक प्रचार भी कभी-कभी राजनीतिक ब्रांडिंग में बदल सकता है।

इस नए राजनीतिक मंच से लाखों लोगों के जुड़ने का दावा किया जा रहा है। अगर यह संख्या वास्तविक और सक्रिय राजनीतिक समर्थन में बदलती है तो निश्चित तौर पर यह मुख्यधारा की पार्टियों के लिए विचार करने का विषय होगा। लेकिन किसी डिजिटल प्लेटफार्म पर फालोअर या सदस्य संख्या और वास्तविक चुनावी समर्थन में बड़ा अंतर होता है। चुनाव बूथ पर लड़ा जाता है, जहां संगठन, उम्मीदवार, स्थानीय मुद्दे और मतदाता का भरोसा निर्णायक होता है। यही इस नए राजनीतिक प्रयोग की सबसे बड़ी परीक्षा होगी।

देश की राजनीति में भाजपा और कांग्रेस के बीच मुकाबले के बीच कई छोटे राजनीतिक प्रयोग समय-समय पर सामने आते रहे हैं। कुछ आंदोलनों ने राजनीतिक दल का रूप लिया तो कुछ सोशल मीडिया की सीमाओं से आगे नहीं बढ़ पाए। दिमागी नक्सल नाम से सामने आया राजनीतिक प्रयोग भी अब इसी कसौटी पर देखा जाएगा। क्या यह केवल प्रधानमंत्री के बयान की प्रतिक्रिया तक सीमित रहेगा या बेरोजगारी, महंगाई, शिक्षा, स्वास्थ्य, लोकतांत्रिक संस्थाओं और सामाजिक मुद्दों को लेकर अपना स्वतंत्र राजनीतिक एजेंडा तैयार करेगा? यदि यह मंच केवल एक राजनीतिक तंज का जवाब बनकर रह गया तो इसकी उम्र सीमित हो सकती है। लेकिन यदि यह अपने नाम से आगे निकलकर नीति, संगठन और जमीन से जुड़े मुद्दों पर स्पष्ट कार्यक्रम तैयार करता है, तब इसकी राजनीतिक प्रासंगिकता बढ़ सकती है।

इस पूरे घटनाक्रम का सबसे बड़ा संदेश शायद यही है कि राजनीति में शब्दों को हल्के में लेना अब आसान नहीं है। सत्ता का एक तंज सोशल मीडिया में हजारों पोस्ट, मीम और अभियान का आधार बन सकता है और वही अभियान किसी दिन राजनीतिक संगठन का रूप लेने का दावा भी कर सकता है। लेकिन लोकतंत्र में अंततः फैसला नारों से नहीं, जनता के वोट से होता है। इसलिए दिमागी नक्सल नाम का यह प्रयोग कितना बड़ा राजनीतिक विकल्प बनता है, यह आने वाला समय बताएगा।

फिलहाल इतना जरूर है कि जिस शब्द को राजनीतिक तंज के रूप में इस्तेमाल किया गया, वही अब विरोध की पहचान बनने की कोशिश कर रहा है। काकरोच से लेकर दिमागी नक्सल तक की यह राजनीति बताती है कि भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक भाषा का नया दौर शुरू हो चुका हैकृजहां सत्ता का तंज भी कभी-कभी विपक्ष की नई कहानी लिख देता है।

दूल्हे ने की थी हर्ष फायरिंग, मुकदमा दर्ज

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। दुल्हे को अपनी शादी में हर्ष फायरिंग करना महगा पड़ गया। मामले का सोशल मीडिया में वीडियो जारी होने पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। हरिद्वार के कनखल कोतवाली क्षेत्र में एक बैंक्वेट हॉल में अपनी ही शादी में लाइसेंसी पिस्तौल से गोली चलाते हुए दूल्हे का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद पुलिस हरकत में आई है। 21 दिन पहले हुई शादी का वीडियो हाल ही में वायरल हुआ, जिसके बाद पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज कर ली है। पुलिस आगे की कार्रवाई की तैयारी में जुट गई है।

जानकारी के अनुसार बीती 26 जुलाई को लक्सर रोड स्थित वाटिका फार्म, जगजीतपुर में टांडा मेहतोली, सुल्तानपुर निवासी योगेश कुमार की शादी की पार्टी आयोजित की गई थी। इसी दौरान योगेश कुमार ने एक हाथ से दुल्हन का हाथ पकड़कर आगे बढ़ते हुए दूसरे हाथ से अपनी लाइसेंसी पिस्तौल से एक के बाद एक फायरिंग की। कई राउंड फायरिंग करते हुए वीडियो बनवाया और इसे सोशल मीडिया पर अपलोड कर दिया। वीडियो जमकर वायरल हुआ और लाखों लोगों ने इसे देखा। इसके बाद पुलिस हरकत में आई। कनखल कोतवाली में तैनात एएसआई ललित मोहन सिंह की ओर से आरोपी योगेश कुमार के खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत प्राथमिकी दर्ज कराई गई। सीओ सिटी शिशुपाल सिंह नेगी ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। जल्द ही आगे की कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

रिश्वतखोर कृषि अधिकारी गिरफ्तार

सब्सिडी की फाइल बढ़ाने पर मांगी गयी थी 10 हजार रुपये की रिश्वत

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। कृषि यंत्र खरीदने के लिए मिलने वाली सब्सिडी की फाइल आगे बढ़ाने के एवज में 10 हजार रुपये की रिश्वत मांगना सहायक कृषि अधिकारी को भारी पड़ गया। सतर्कता अधिष्ठान की ट्रैप टीम ने आरोपी अधिकारी को रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया है।

शिकायतकर्ता ने सतर्कता अधिष्ठान में शिकायत की थी कि उसके भाई को कृषि यंत्र खरीदने के लिए मिलने वाली सब्सिडी की फाइल आगे बढ़ाने के बदले रिश्वत की मांग की जा रही है। शिकायत के सत्यापन के बाद सतर्कता टीम ने ट्रैप की कार्रवाई की। 18 अगस्त को टीम ने हरिओम यादव पुत्र स्व. लाल सिंह, निवासी

प्रतापनगर, नजीबाबाद रोड, कोटद्वार, पौड़ी गढ़वाल, हाल सहायक कृषि अधिकारी, विकासखंड खानपुर, जिला हरिद्वार को शिकायतकर्ता से 10 हजार रुपये की रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया। सतर्कता अधिष्ठान की टीम आरोपी से पूछताछ के साथ मामले में आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है।

बता दें कि उत्तराखण्ड राज्य में रिश्वतखोरी व भ्रष्टाचार के मामले लगातार सामने आ रहे है। हालांकि सर्तकता अधिष्ठान ऐसे लोगों पर लगातार कार्यवाही कर रहा है। लेकिन फिर भी यह मामले थमने का नाम नहीं ले रहे है।

बीते एक वर्ष के दौरान कई विभागों के अधिकारी व कर्मचारी रिश्वतखोरी के मामले में जेल की हवा खा चुके है।

नाबालिग बेटियों से दुष्कर्म करने वाला कलयुगी बाप गिरफ्तार

हमारे संवाददाता

पौड़ी। नाबालिग बेटियों के साथ लम्बे समय से दुष्कर्म करने वाले कलयुगी पिता को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। जिसे न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया गया है।

जानकारी के अनुसार कोटद्वार निवासी एक महिला द्वारा कोतवाली कोटद्वार में एक शिकायती पत्र देकर बताया गया कि उसके पति द्वारा अपनी नाबालिग पुत्रियों के साथ पिछले कई समय से दुष्कर्म एवं यौन शोषण किया जा रहा था, साथ ही इसके संबंध में किसी को जानकारी देने अथवा पुलिस में शिकायत करने पर जान से मारने तथा घर से निकाल देने की धमकी दी जाती थी। मामले की गम्भीरता को देखते हुए पुलिस ने तत्काल पोक्सो एक्ट सहित अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी गयी। प्रकरण की प्रारम्भिक जांच के दौरान पुलिस को पता चला कि पति-पत्नी के मध्य पारिवारिक विवाद चल रहा था। ऐसे में शिकायत में लगाए गए आरोपों की वास्तविकता एवं सत्यता का निष्पक्ष रूप से जांच करना, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि प्रकरण में कहीं आपसी आरोप-प्रत्यारोप अथवा पारिवारिक विवाद के चलते लगाए गए आरोप तो नहीं हैं। प्रकरण की संवेदनशीलता को देखते हुए पुलिस ने

जांच की।

जांच के दौरान पीड़िता के बयान नियमानुसार दर्ज किए गए तथा घटनाक्रम से संबंधित विभिन्न पहलुओं की गहन जांच कर प्रकरण में उपलब्ध साक्ष्यों का संकलन किया गया। साथ ही प्रकरण में पुलिस टीम द्वारा आरोपी से पूछताछ एवं जानकारी की गई। प्रारम्भ में आरोपी द्वारा विभिन्न प्रकार के बहाने बनाकर तथ्यों को छिपाने का प्रयास किया गया, किंतु आवश्यक साक्ष्य संकलन, पीड़िता के बयानों व आवश्यक कार्यवाही के पश्चात आरोपी द्वारा किए गए अपराध को स्वीकार किया गया। जिस पर पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया जहां से उसे जेल भेज दिया गया है। गिरफ्तार आरोपी का नाम अनुप चंद्र, निवासी कोटद्वार बताया जा रहा है।

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकारः
वी के अरोड़ा, *एडवोकेट*
बैजनाथ, *एडवोकेट*

कार्यालयः दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोटः सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।